सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
मूल्य ₹ 3/-
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक 215 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 12 सितम्बर, 2026

यदि आप एक कंपनी बनाने का प्रयास कर रहे हैं, तो ये एक केक बनाने की तरह है। आपको सभी सामग्री सही मात्र में डालनी होगी।

-इलोन मस्क

महिला एशिया कप: श्रीलंका ने पाकिस्तान को... 7 | एकबार फिर बिहार में सियासी... 3 | सपा को बदनाम करने के लिए नित... 2

नियमों को ताक पर रखकर पैसों के बल पर चल रहा

फहद इलाही का लखनऊ मेट्रोसिटी हॉस्पिटल

अफसरों से यारी हॉस्पिटल में मनमानी फहद इलाही के रसूख का राज

» लखनऊ मेट्रो सिटी हॉस्पिटल पर आरोपों की बारिश

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आज बात एक ऐसे हॉस्पिटल की जो लखनऊ के पॉश इलाके में हैं। इसके चेयरमैन लखनऊ के एक चर्चित पेज थ्री पर्सनाल्टी वाले व्यक्ति हैं। दूसरों पर भौकाल जमा कर अपने काम निकालने में माहिर है और बहुत सारे व्यापारों में लिप्त है। जी हां हम बात कर रहे हैं मेट्रो सिटी हॉस्पिटल की जोकि अब लखनऊ मेट्रो सिटी हॉस्पिटल हो गया है। यह हॉस्पिटल मिठाई वाला चौराहा के आसपास है। हॉस्पिटल और फहद दोनों ने पिछले दिनो काफी तरक्की की है।

पहले यह सिर्फ हॉस्पिटल था लेकिन अब यहा नर्सिंग के छात्रों की पढ़ाई के साथ-साथ ओल्ड ऐज होम के साथ दूसरी कई चीजें संचालित की जा रही है। यह पूरी सिरीज है जिसमें हम उनके ऊपर के कनेक्शन के साथ दूसरे धंधों पर भी प्रकाश डालेंगे आज की शुरूआत बेसमेंट से... । यूपी की राजधानी लखनऊ में रसूख अगर बड़ा हो तो नियम अक्सर छोटे पड़ जाते हैं? गोमती नगर के लखनऊ मेट्रो सिटी हॉस्पिटल को लेकर उठ रहे सवाल इसी दिशा की ओर इशारा कर रहे हैं। हॉस्पिटल से जुड़े फहद इलाही की ऊंचे अधिकारियों और प्रभावशाली लोगों के साथ नजदीकियों की तस्वीरें और उनकी सोशल मीडिया मौजूदगी लंबे समय से चर्चा में हैं। महंगे कपड़े लग्जरी यस लाइफ स्टाइल जीने वाले फहद का सोशल नेटवर्क और रसूख उनके कारोबारी साम्राज्य के लिए ऐसा सुरक्षा कवच बन गया है जिसके साये में हॉस्पिटल परिसर में वह गतिविधियां चल रही हैं जिनकी वैधता और सुरक्षा मानकों पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं?

सहारा श्री के बिजनेस मॉडल की तरफ बढ़ रहे फहद इलाही?

लखनऊ के कारोबारी गलियारों में फहद इलाही का नाम अब सिर्फ अस्पताल और चिकित्सा सेवाओं तक सीमित चर्चा का विषय नहीं रह गया है। उनकी सोशल मीडिया मौजूदगी, प्रभावशाली लोगों के साथ तस्वीरें और हाई प्रोफाइल जीवनशैली ने उनके कारोबारी मॉडल को लेकर भी सवाल खड़े किए हैं। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या फहद इलाही का कारोबार भी उस दौर के बड़े कारोबारी साम्राज्यों की तर्ज पर अलग-अलग क्षेत्रों में विस्तार की दिशा में बढ़ रहा है जिसकी सबसे चर्चित मिसाल कभी सहारा समूह के संस्थापक सुब्रत रॉय सहारा श्री का कारोबारी मॉडल रहा था? यहां तुलना किसी कानूनी या कारोबारी समानता का दावा नहीं है। सवाल सिर्फ इतना है कि एक ही कारोबारी पहचान के इर्द गिर्द अलग अलग क्षेत्रों में प्रभाव और विस्तार की तस्वीर कैसे बन रही है। सहारा समूह के दौर में रियल एस्टेट से लेकर मीडिया, होटल, मनोरंजन और वित्तीय गतिविधियों तक कारोबार का बड़ा विस्तार दिखाई देता था। फहद इलाही को लेकर भी अब हॉस्पिटल और चिकित्सा शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों के साथ उनकी कारोबारी पहुंच और सामाजिक संपर्क चर्चा में हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी हो जाता है कि इन गतिविधियों का वास्तविक स्वरूप क्या है और इनके पीछे कौन कौन सी कंपनियां संस्थाएं और कारोबारी ढांचे काम कर रहे हैं।

मामला सिर्फ एक बेसमेंट का नहीं है

लखनऊ मेट्रो सिटी हॉस्पिटल के बेसमेंट के इस्तेमाल को लेकर गंभीर सवाल खड़े हैं। जिस शहर ने अस्पतालों, हॉस्टलों और कोचिंग सेंटरों में सुरक्षा की अनदेखी के भयावह नतीजे देखे हैं उसी लखनऊ में अगर किसी हॉस्पिटल के बेसमेंट को लेकर सवाल उठ रहे हैं तो प्रशासन के लिए यह महज एक खबर नहीं एक चेतावनी होनी चाहिए। मामला इसलिए भी गंभीर है क्योंकि यह कोई दूरदराज का छोटा हॉस्पिटल नहीं बल्कि राजधानी के प्रमुख इलाके में स्थित चिकित्सा संस्थान है। हॉस्पिटल में मरीजों की आवाजाही के साथ मेडिकल छात्रों का प्रशिक्षण भी होता है तो भवन सुरक्षा, अग्निशमन व्यवस्था, आपातकालीन निकास और अन्य मानकों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है।

अनियमितता का प्रमाण नहीं है तस्वीरें

सबसे अहम बात यह है कि किसी कारोबारी की अधिकारियों या प्रभावशाली लोगों के साथ तस्वीरें अपने आप में किसी अनियमितता का प्रमाण नहीं होतीं। कारोबारी और प्रशासनिक संपर्क होना भी अपने आप में गलत नहीं है। लेकिन जब किसी संस्थान की व्यवस्थाओं को लेकर गंभीर सवाल सामने आएं तो रसूख नहीं, दस्तावेज जवाब देते हैं। यही वजह है कि अब नजर उन्हीं दस्तावेजों पर होनी चाहिए।

लखनऊ मेट्रो सिटी हॉस्पिटल पर सवाल

लखनऊ मेट्रो सिटी हॉस्पिटल के मामले में अब जांच के कई बिंदु हैं। बेसमेंट का स्वीकृत उपयोग क्या है? वहां कौन सी गतिविधियां चल रही हैं? मेडिकल और नर्सिंग छात्रों के प्रशिक्षण के लिए कौन सी अनुमति है? हॉस्पिटल के पास वैध फायर एनओसी है या नहीं? और मौके पर सुरक्षा के निर्धारित मानक पूरे हो रहे हैं या नहीं? मेट्रो सिटी हॉस्पिटल का स्वीकृत भवन मानचित्र क्या कहता है? बेसमेंट के इस्तेमाल की अनुमति किस उद्देश्य के लिए है? हॉस्पिटल में मेडिकल और नर्सिंग छात्रों से जुड़ी गतिविधियां किस अनुमति के तहत संचालित हैं? फायर सेफ्टी की स्थिति क्या है? संबंधित विभागों ने कब-कब निरीक्षण किया और उनकी रिपोर्ट में क्या दर्ज है? इन सवालों के जवाब मिलते ही यह भी साफ हो जाएगा कि हॉस्पिटल की वास्तविक व्यवस्था कागजों पर दर्ज अनुमति के अनुरूप है या नहीं। फहद इलाही के मामले में भी अब ग्लैमर रसूख और सोशल मीडिया की तस्वीरों से आगे बढ़कर उन कागजों को देखना होगा जो यह बताएंगे कि लखनऊ मेट्रो सिटी हॉस्पिटल का कारोबारी और संस्थागत ढांचा वास्तव में कितना बड़ा है और उसकी गतिविधियां किस नियम कायदे के तहत संचालित हो रही हैं।

सपा को बदनाम करने के लिए नित नए षड्यंत्र कर रही भाजपा : अखिलेश

» सपा प्रमुख बोले- सरकार बनते ही हटेंगे आजम खां पर लगे मुकदमे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने एकबार फिर भाजपा पर तीखा हमला बोला है। सपा प्रमुख ने कहा कि भाजपा का आचरण लोकतंत्र विरोधी है। सरकार संविधान के खिलाफ काम कर रही है। समाजवादी पार्टी को बदनाम करने के लिए नित नए षड्यंत्र कर रही है। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता नेता और समर्थक संयम से रहें। अपनी भाषा और व्यवहार को मर्यादित रखें। अखिलेश यादव प्रदेश सपा मुख्यालय पर प्रदेश के विभिन्न जिलों से बड़ी संख्या में आए कार्यकर्ताओं एवं नेताओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में दस साल से और दिल्ली की सत्ता में 13 साल से काबिज भाजपा सरकार पूरी तरह विफल हो गई है।

उन्होंने कहा कि वर्ष 27 के विधानसभा चुनाव में हार के डर से अनर्गल आरोप लगा रही है। समाजवादी पार्टी का लोकतंत्र और संविधान पर भरोसा है। समाजवादी पार्टी सबको साथ लेकर चलती है। समाजवादी पार्टी लोकतांत्रिक मूल्यों को समझती है और कभी भी भाजपा जैसा आचरण नहीं कर सकती है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी सरकार आने पर मो. आजम खां पर लगे सभी मुकदमे उसी तरह से वापस ले लिए जाएंगे, जिस तरह से मुख्यमंत्री और डिप्टी सीएम ने अपने और अपने लोगों के मुकदमे वापस लिए हैं।

विधायकों के टिकट काटने के लिए भाजपा कर रही बैठकें

अखिलेश यादव ने भाजपा की बैठकों पर कहा कि विधायकों के टिकट काटने की सूची बनाने के लिए बैठकें हो रही है। भाजपा अपने विधायकों की टिकट तो काटेगी ही, गठबंधन के सहयोगी दलों के विधायकों के भी टिकट काटने जा रही है।

सपा प्रमुख आए मूंछों वाले चाचा के साथ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के साथ नजर आए मूंछ वाले चाचा इन दिनों चर्चा में हैं। बड़ी-बड़ी मूंछों वाले 75 वर्षीय जगदीश यादव को अखिलेश यादव ने लखनऊ बुलाया। उन्हें अपने साथ बैठाया और फिर उनकी मूंछों पर ताव भी दिलवाया। अखिलेश यादव ने जगदीश यादव की मूंछों की तारीफ करते हुए कहा कि ऐसी मूंछों पर ताव देना अच्छा लगता है. इतना ही नहीं, उन्होंने मूंछों की देखभाल के लिए जगदीश यादव को रुपये भी दिए। ललितपुर के बघौरा गांव के रहने वाले जगदीश यादव को मूंछें रखने का शौक करीब 20 साल की उम्र से है. वह पिछले 55 साल से मूंछें रख रहे हैं. समय के साथ उनकी मूंछें उनकी पहचान बन गईं. जगदीश यादव बताते हैं कि उन्हें हमेशा से बड़ी मूंछें रखने का शौक रहा है. चार भाइयों और तीन बहनों में सबसे बड़े जगदीश यादव के दो बेटे और एक बेटी है।

माता प्रसाद पांडेय के घर जाकर लिया हालचाल

सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने वरिष्ठ समाजवादी और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय से लखनऊ में वृंदावन कालोनी स्थित उनके आवास पर मुलाकात कर स्वास्थ्य की जानकारी ली। इस अवसर पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव व पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेंद्र चौधरी मौजूद रहे। अखिलेश यादव ने माता प्रसाद पांडेय के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

सपा ने ही आजम खां को फंसाया था : राजभर

प्रदेश सरकार के पंचायती राज कैबिनेट मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने शनिवार को समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कहा कि सपा सरकार के कार्यकाल के कारनामों को जनता भूली नहीं है और इसका जवाब 27 के चुनाव में देगी। केवल बयानबाजी से सरकार नहीं बनती। अंबेडकरनगर में एक सीट उपचुनाव में जा चुकी है और 27 में जिले की शेष चारों सीटों पर भी सपा हार जाएगी। आजम खां के मुद्दे पर राजभर ने कहा कि उन्हें फंसाने वाले अखिलेश यादव हैं। जब सरकारी जमीन और धन से कॉलेज बनाया जा रहा था तो जमीन का हस्तांतरण क्यों नहीं किया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि सपा और कांग्रेस सरकारों के समय वक्फ की करोड़ों रुपये की जमीनें हजारों रुपये में लीज पर दी गईं। इन जमीनों पर मॉल और होटल बनाए गए तथा मोटा किराया वसूला जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में जमीनें बेची नहीं गईं।

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से पंचायत सहायकों के प्रतिनिधिमंडल ने भेंट कर उन्हें ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया गया है कि उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों के 58672 पंचायत सहायक 7 सितंबर से ईको गार्डन, लखनऊ में अपनी मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हुए हैं। सरकार की तरफ से उनकी मांगों का न कोई संज्ञान ले रहा है, न कोई प्रतिनिधि बात करने आया है। अखिलेश यादव ने भरोसा दिया कि समाजवादी सरकार बनने पर उनकी मांगों पर अमल किया जाएगा। प्रतिनिधि मंडल में अभिषेक यादव, शिवम मिश्रा व पुष्पा देवी शामिल थीं।

दिल-दिमाग साफ करे विपक्ष : मायावती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे करीब आ रहे हैं, नीला रंग चर्चा का विषय बन गया है क्योंकि समाजवादी पार्टी (सपा) और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के बीच इसे लेकर जुबानी जंग छिड़ गई है। याद दिला दें कि समाजवादी पार्टी के

प्रमुख अखिलेश यादव ने हाल ही में पार्टी की छात्र शाखा (स्कछात्र सभा) के लिए नीली यूनिफॉर्म लॉन्च की थी। इसके अलावा, यूनिफॉर्म लॉन्च होने से तीन दिन पहले, अखिलेश यादव एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान गले में नीला स्कार्फ पहनकर पहुंचे थे। इस कदम से यह धारणा बनी कि एसपी इसके जरिए दलित वोटरों को लुभाने की कोशिश कर रही है। इस बीच, बसपा प्रमुख मायावती ने अखिलेश यादव पर निशाना साधा।

बिना उनका नाम लिए, उन्होंने कहा कि सपा के नीले रंग को अपनाना, गले में नीला स्कार्फ पहनना, नीले कपड़े पहनना या मंच पर नीला कपड़ा लगाने से किसी पार्टी की जातिवादी सोच नहीं बदलेगी। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क पर मायावती ने लिखा कि अगर आप सच में गरीबों, दलितों, आदिवासियों, पिछड़े वर्गों और दूसरे उपेक्षित वर्गों की परवाह करते हैं, तो स्क और कांग्रेस समेत सभी विपक्षी पार्टियों को सबसे पहले अपने दिल और दिमाग को साफ करना होगा। सिर्फ नीला रंग अपनाने से कोई अंबेडकरवादी नहीं बन जाता। मायावती के भतीजे आकाश आनंद को कांग्रेस में शामिल होने के कथित ऑफ़र पर मायावती ने कहा कि कांग्रेस डूबते हुए जहाज़ की तरह है। कोई भी इसमें शामिल होकर अपने राजनीतिक भविष्य को अंधेरे में क्यों डालेगा? आकाश को बसपा से निकाले जाने के बाद, उत्तर प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी राजेंद्र पाल गौतम ने कहा था कि आकाश के लिए कांग्रेस के दरवाजे खुले हैं और उन्हें पूरा सम्मान दिया जाएगा। वहीं सपा प्रमुख ने भी उनको लेने की बात कही थी।

कैबिनेट मंत्री ही न्याय के लिए धरने पर बैठे : संजय

» आप सांसद बोले- आम जनता की सुरक्षा की गारंटी कौन देगा?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आम आदमी पार्टी के उत्तर प्रदेश प्रभारी और राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने गोंडा के व्यापारी विनोद कुमार साहनी की हत्या को लेकर प्रदेश सरकार और कानून-व्यवस्था पर निशाना साधा है। सोशल मीडिया पर जारी बयान में उन्होंने कहा कि जब प्रदेश सरकार में शामिल कैबिनेट मंत्री डॉ. संजय निषाद को ही अपनी ही पुलिस के रवैये के खिलाफ न्याय की मांग को लेकर केजीएमयू के पोस्टमार्टम हाउस के बाहर धरने पर बैठना पड़े, तो आम जनता की सुरक्षा की गारंटी कौन देगा।

। संजय सिंह ने कहा कि गोंडा के परसपुर थाना क्षेत्र में बर्तन व्यापारी और निषाद पार्टी कार्यकर्ता विनोद कुमार साहनी की हत्या कर दी गई। गंभीर रूप से घायल व्यापारी की लखनऊ के केजीएमयू में इलाज के दौरान मौत हुई। उन्होंने कहा कि मृतक को न्याय दिलाने के लिए प्रदेश के कैबिनेट मंत्री को सड़क पर धरने पर बैठना पड़ रहा है। आप सांसद ने सवाल उठाया कि जब सत्ता में शामिल लोग ही अपनी सरकार के पुलिस-प्रशासन से न्याय की मांग कर रहे हैं, तो थाने और चौकियों के चक्कर काट रहे आम नागरिकों की स्थिति क्या होगी।

संजय सिंह ने आरोप लगाया कि मामले में स्थानीय पुलिस प्रशासन ने आरोपियों को खुली छूट दी। उनके मुताबिक, मृतक के परिजनों ने परसपुर के थानाध्यक्ष और चौकी प्रभारी पर लापरवाही बरतने तथा आरोपियों के खिलाफ समय पर कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि जब सत्ता के सहयोगी दल के नेता को ही लापरवाह पुलिसकर्मियों पर मुकदमा दर्ज करने, उन्हें निलंबित करने और आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर धरने पर बैठना पड़ रहा है, तो यह सरकार के कानून-व्यवस्था के दावों पर सवाल खड़े करता है।

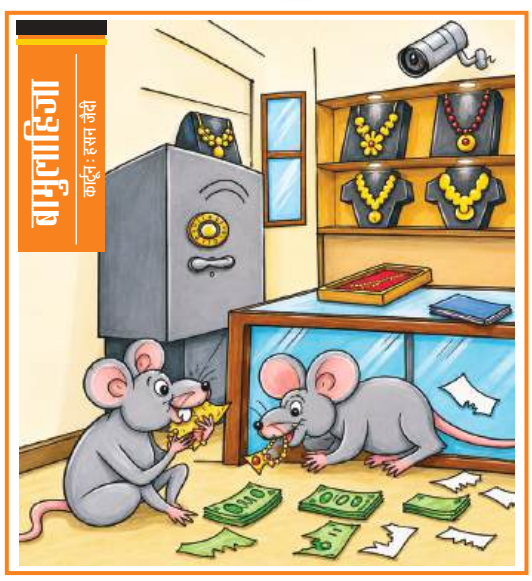

भाई पर फिर भड़कीं रोहिणी तेजस्वी को किया मैसेज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य की अपने भाई तेजस्वी यादव से नाराजगी दूर नहीं हुई है। वह एक फिर से अपने भाई तेजस्वी यादव पर भड़क गई हैं। शिक्षक-स्नातक विधान परिषद् चुनाव में राजद की ओर से उम्मीदवारों की घोषणा के बाद रोहिणी का गुस्सा सामने आया है।

उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट लिखकर बता दिया कि उम्मीदवारों के चयन से वह खुश नहीं हैं। शनिवार को रोहिणी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि वैचारिक निष्ठा और लंबे संघर्ष को दरकिनार कर ऐन चुनाव (विधान परिषद चुनाव) से पहले आए अवसरवादी चेहरों को प्राथमिकता देना समर्पित नेताओं-कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों का घोर अनादर है।

पीए पर ईडी छापे के बाद हरीश रावत भड़के

» बोले कांग्रेस नेता- सदस्यता मेरे खून में, पार्टी पर असर पड़ा तो छोड़ दूंगा पद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने कहा कि कांग्रेस पार्टी की सदस्यता मेरे खून और हड्डियों में है। हरीश रावत जो कुछ भी है, उस सबका निर्माण करती है। वह तो मेरे साथ ही स्वर्ग में भी जाएगी। सोशल मीडिया पर लिखी पोस्ट में उन्होंन कहा कि यदि कल-परसों देहरादून में ईडी का जो पाखंडपूर्ण चकल्लस हुई है और मैंने यह कहा है कि यदि उससे कांग्रेस पार्टी के भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने के नैरेटिव पर कोई असर पड़ता है, तो पार्टी के जो पद मेरे पास हैं, प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य और एआईसीसी की वर्किंग कमेटी के सदस्य मैं उन पदों से त्यागपत्र देना चाहूंगा। पूर्व सीएम रावत ने कहा कि वह नहीं चाहते कि उनके किसी कार्य से पार्टी का संघर्ष कमजोर हो।

प्रवर्तन निदेशालय ने उनके ओएसडी के परिसरों पर छापा मारा था। यह छापा 2016 की उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग भर्ती परीक्षा में कथित अनियमितताओं से जुड़ी धन शोधन जांच के संबंध में था। रावत ने अपने सहयोगी द्वारा किसी भी गलत काम के आरोपों से इन्कार किया। उन्होंने कहा कि टेलीविजन पर उनके निजी सहायक से नकदी और आभूषण जब्त होने की खबरें थीं। रावत ने स्वीकार किया कि जीना उनके ओएसडी रहे हैं। उन्होंने पार्टी और सरकार में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभाली हैं। उन्होंने जीना को एक विनम्र और मेहनती व्यक्ति बताया। रावत ने कहा कि यदि ग्राम सेवकों की भर्ती में ओएमआर शीट से छेड़छाड़ हुई है,

तो उन्हें शर्म आएगी। हालांकि, उन्हें इस आरोप पर विश्वास नहीं है। उन्होंने उत्तराखंड विधानसभा चुनावों में बड़ा दांव लगने की बात कही। कांग्रेस पार्टी और उसके कार्यकर्ता भ्रष्टाचार के खिलाफ एकजुट होकर लड़ रहे हैं। राहुल गांधी छात्रों की गूंज कार्यक्रम से शिक्षा प्रणाली में भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं।रावत ने भाजपा के नेतृत्व वाले केंद्र पर कटाक्ष किया।

उन्होंने कहा कि चुनाव तब होते हैं जब सीबीआई उनके दरवाजे पर आती है। इस बार उनके सहयोगी के घर पर दस्तक देकर एक कहानी गढ़ने का प्रयास किया गया है। रावत ने कहा कि ऐसे समय में यदि उनके किसी कार्य से पार्टी का संघर्ष कमजोर होता है, तो वह ऐसा बिल्कुल नहीं चाहेंगे। इसलिए उन्होंने यह बड़ा निर्णय लिया है।रावत ने बताया कि वह कोई सरकारी पद नहीं संभाल रहे हैं, इसलिए वहां से त्यागपत्र देने का सवाल ही नहीं है। हालांकि, वह उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस समिति के कार्यकारी सदस्य हैं। साथ ही, वह राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस कार्य समिति के स्थायी आमंत्रित सदस्य भी हैं। उन्होंने अत्यंत विनम्रता के साथ इन दोनों पदों से हटने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि वह नहीं चाहते कि उनकी वजह से पार्टी का संघर्ष किसी भी तरह से कमजोर हो।

एकबार फिर बिहार में सियासी रार

होने वाला है केंद्र की मोदी कैबिनेट में फेरबदल या विस्तार

- जदयू समेत सहयोगी दलों में हलचल तेज हुई
- पटना स्नातक क्षेत्र में चुनाव को लेकर भी सुगबुगाहट
- कई नेताओं की धड़कनें बढ़ी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। केंद्र की मोदी कैबिनेट में फेरबदल या विस्तार की खबर से दिल्ली से पटना तक सियासी हलचल बढ़ गई है। इसके चर्चे क्या हो रहे जदयू की राजनीति में उठापटक मची हुई है। उधर पटना स्नातक क्षेत्र में चुनाव को लेकर भी सुगबुगाहट तेज हो गई है। चर्चा यह हो रही है कि जनता दल यू का आलाकमान अगर फेरबदल की स्वीकृति देता है तो जदयू में घमासान शुरू हो जाएगा। ऐसा इसलिए कि कोटे के तहत जनता दल यू के दो सांसदों को मंत्री बनाया जा सकता है। ऐसे में जदयू नेतृत्व कोई बदलाव करता है तो केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह या केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर में से किसी एक को पद छोड़ना पड़ेगा।

इन प्रश्नों के साथ जनता दल यू के भीतर कई तरह के सवाल उठाए जा रहे हैं। इन सवालों का असर यह है कि जदयू कई खेमे में बंटता नजर आने लगा है। चलिए समझते हैं जदयू के भीतर चल रहे खेल को।

राजनीतिक विशेषज्ञ के मुताबिक मोदी मंत्रिपरिषद में बदलाव की बात तो है, पर जदयू के भीतर जो घमासान मचा है, वह स्वाभाविक प्रक्रिया है। अब फेरबदल होता है या पुराने चेहरे रहेंगे। इस पर तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ही चलेंगी। लेकिन जनता दल यू की सूत्रों की बात करें तो ललन सिंह और संजय झा में पलड़ा संजय झा का भारी है। पिछले दिनों छोटू सिंह को पार्टी से निष्कासित कर उन्होंने अपना बढ़ा कद भी दिखाया। वो भी तब जब छोटू सिंह मुख्यमंत्री रहते हुए नीतीश कुमार के काफी करीबी रहे। छोटू सिंह ने तब बड़े बड़े दावे भी किए थे। लेकिन बाद में उन्हें बिहार नागरिक परिषद के महासचिव पद से हटा कर संजय झा ने अपनी ताकत दिखा दी। वहीं इन दिनों जिस तरह से संजय झा को बीजेपी का केंद्रीय नेतृत्व जिस ढंग से तरजीह दे रहा है, उसके मुताबिक तो संजय झा का मंत्री बनना तय माना जा रहा है।

जदयू के भीतर चल रहे इस राजनीतिक घमासान के कारण बिहार की राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ सकता है? वहीं पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र का चुनाव हर दिन एक नया मोड़ लेकर आता है। जदयू के नामचीन नेता नीरज कुमार एक तरफ जहां चौंका मारने की तैयारी कर रहे हैं, वहीं उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी उनकी राह को मुश्किल करते जा रहे हैं। हालिया स्थिति यह है कि नीरज कुमार की उम्मीद पर ग्रहण लगाने के लिए गठजोड़ होने लगा है। अपने लोग ही एक एक कर नीरज कुमार के विरोध में मजबूत बॉन्डिंग कर ग्रुप ए क्यू यानि ए टू पावर क्यू बना चुके हैं। ये कौन है ए क्यू जानते हैं।

संजय झा का नाम आगे आगे

मंत्री बनने के रेस में अभी सबसे आगे जनता दल यू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा हैं। कहा जा रहा है कि नीतीश कुमार के सबसे करीबी संजय झा हैं। अगर नीतीश कुमार ने संजय झा को केंद्रीय मंत्री बनाने की स्वीकृति दे दी तो केंद्रीय मंत्री ललन सिंह पर गाज गिरेगी। ऐसा संभव नहीं है कि बिहार से केंद्रीय मंत्रिपरिषद में जदयू का प्रतिनिधित्व दो सवर्ण मंत्रियों का हो। ऐसे में रामनाथ ठाकुर का हटना मुश्किल है। अभी जनता दल के रणनीतिकार अतिपिछड़ा वोट बैंक से कोई छेड़छाड़ करने की गुस्ताखी नहीं करेंगे। रही संजय झा की बात, तो इन दिनों जदयू का प्रतिनिधित्व करते हुए वो बीजेपी के शीर्ष नेताओं से लगातार मिल रहे हैं।

नीरज कुमार के चौके की राह में खड़ी तिकड़ी

पटना स्नातक क्षेत्र में जदयू के उम्मीदवार नीरज कुमार के विरोध की पहली आवाज या कह लें तो माहौल सबसे पहले अनंत सिंह ने बनाया। राजनीतिक गलियारों की बात करें तो अनंत सिंह का नीरज कुमार के विरोध में उतरना कोई अप्रत्याशित नहीं था। यह तो तभी से संभावित था, जब बिहार विधानसभा 2025 में मोकामा विधानसभा से चुनाव

लड़ रहे अनंत सिंह के चुनावी प्रचार में नीरज कुमार ने जाने से मना कर दिया था। एक सिद्धांत की बात करते तब नीरज कुमार ने साफ कहा था कि ऐसे किसी बाहुबलियों के प्रचार में नहीं जाएंगे। इसका काफी असर मोकामा विधानसभा में दिखा। तब से ही यह चर्चा शुरू हो गई थी कि अनंत सिंह भी स्नातक निर्वाचनजा क्षेत्र में नीरज कुमार का साथ नहीं देंगे।

JDU में भी कैबिनेट बदलाव को लेकर हलचल

संभावित फेरबदल की चर्चा सिर्फ बीजेपी तक सीमित नहीं है। जनता दल यूनाइटेड यानी JDU को लेकर भी नए समीकरण की बात सामने आ रही है। चर्चा है कि संजय झा सितंबर में होने वाले कैबिनेट विस्तार का हिस्सा बन सकते है। अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी JDU को दो मंत्री पद देने पर सहमत होते हैं, तो राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह की कुर्सी पर खतरा नहीं होगा। लेकिन अगर JDU को सिर्फ एक मंत्री पद मिलता है, तो ऐसी

स्थिति में ललन सिंह की जगह संजय झा को केंद्र में जगह मिलने की संभावना जताई जा रही है। संभावित फेरबदल को लेकर बिहार के कुछ मौजूदा मंत्रियों के नाम भी चर्चा में हैं। इनमें केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह और कोयला एवं खान राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुबे का नाम खास तौर पर लिया जा रहा है। गिरिराज सिंह की उम्र को देखते हुए चर्चा है कि उनकी जगह विवेक ठाकुर को केंद्र में मंत्री बनाया जा सकता है। सतीश चंद्र दुबे की जगह राज्यसभा सांसद मनन मिश्रा को मौका दिए जाने की बात कही जा रही है। जल शक्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री राज भूषण चौधरी को लेकर भी बदलाव की चर्चा है। उनके कामकाज को लेकर सवाल उठने की बात कही जा रही है।

राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह मोदी के करीबी

केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह भी इन दिनों पीएम नरेंद्र मोदी के करीब तो हैं ही, साथ ही अपने संबोधन में लगातार प्रधानमंत्री की तारीफ करते नजर आये। पिछले दिनों ही मन की बात पर अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया देते केंद्रीय मंत्री नजर आ रहे हैं। राजनीतिक गलियारों इसे डैमेज कंट्रोल माना जा रहा है। वैसे कौन रहेगा या जाएगा, यह अंतिम

फैसला जदयू से मिले इशारे के बाद मोदी और शाह को ही करना है। पर तब तक जदयू के भीतर हलचल तो चलती रहेगी।

संजय झा ने दिखाए तेवर

जनता दल (यूनाइटेड) के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा ने पिछले दिनों बेगूसराय के सिमरिया में अपने कड़े तेवर दिखाए। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि सरकार रहे या जाए, बिहार के हितों से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। फरक्का जलसंधि समय-सीमा 12 दिसंबर को समाप्त हो रही है, और अब इसे एक्सटेंशन नहीं दिया जाएगा।

ए क्यू के तीसरे सदस्य अरविंद सिंह उर्फ छोटू सिंह

अरविंद सिंह उर्फ छोटू सिंह एक चर्चित जदयू नेता हैं और नीतीश कुमार के भी काफी करीब हैं। इन्हें नीतीश कुमार का हनुमान भी कहा जाता है। अक्सर ये नीतीश कुमार के आस पास ही पाए जाते रहे हैं। ये बिहार राज्य नागरिक परिषद के महासचिव पर थे। संजय झा से हुई बहस के बाद इन्हें इस पद से हटा दिया गया था। इनका पूरा नाम वैसे अरविंद कुमार सिंह उर्फ छोटू सिंह है। ये भी अनंत सिंह के साथ खड़े हो गए हैं और नीतीश के उम्मीद बने नीरज कुमार के विरुद्ध वोट मांगने उतर गए।

अनुज सिंह वाया अनंत सिंह

बिहार विधानसभा चुनाव 25 में अनंत सिंह के विरोध करने का नतीजा हुआ कि अनुज सिंह को पटना स्नातक के लिए तभी से तैयार किए जाने लगा। अनुज सिंह एक शिक्षाविद् हैं, जो हाल ही में पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से बिहार विधान परिषद चुनाव लड़ने

के कारण चर्चा में आए हैं। लेकिन ये लाइम लाइट में तब आए जब पार्टी लाइन से ऊपर उठकर अनंत सिंह ने अनुज सिंह का समर्थन कर डाला, जबकि जदयू की ओर से नीरज कुमार को अपना उम्मीदवार बनाया गया। विचित्र स्थिति तो यह थी कि अनंत सिंह को जब जदयू की बैठक में समझौता के लिए बुलाया गया तो उन्होंने बैठक में कुछ नहीं कहा, पर बाहर निकलकर उन्होंने अनुज सिंह का साथ देने की घोषणा कर दी। साथ ही नीरज कुमार का टेंशन यह कह कर बढ़ा डाला कि हमारे जानने वाले 26 जिलों के मतदाता अनुज कुमार सिंह को वोट करेंगे।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

भूखमरी से पार पाने को और सजग होने की जरूरत

> "एक दशक में पहली बार अफ्रीका में भी भूख से जूझने वाले लोगों की संख्या घटी है ।यह खबर सकारात्मक है, लेकिन दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में स्थिति अब भी बहुत असमान है। रिपोर्ट बताती है कि ग्रामीण इलाकों में पर्याप्त और पौष्टिक भोजन की गंभीर कमी है और इसका असर महिलाओं पर ज्यादा है।

दुनिया में जहां युद्ध एक समस्या है वैसे ही भूखमरी भी एक गंभीर समस्या है। हालांकि संयुक्त राष्ट्र ने हाल ही दुनिया में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति पर अपनी रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट में कुछ उत्साहजनक बातें सामने आई हैं। वर्ष 25 में करीब 64.5 करोड़ लोग भूख से जूझ रहे थे, लेकिन यह संख्या पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 1.4 करोड़ कम थी। एक दशक में पहली बार अफ्रीका में भी भूख से जूझने वाले लोगों की संख्या घटी है। यह खबर सकारात्मक है, लेकिन दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में स्थिति अब भी बहुत असमान है। रिपोर्ट बताती है कि ग्रामीण इलाकों में पर्याप्त और पौष्टिक भोजन की गंभीर कमी है और इसका असर महिलाओं पर ज्यादा है। ऐसे में सरकारों और विकास संगठनों के सामने यह बड़ा सवाल है कि ग्रामीण समुदायों में लोगों को पर्याप्त भोजन मुहैया कराकर भुखमरी खत्म करने के लक्ष्य की ओर तेजी से कैसे बढ़ा जाए? इस दिशा में चार प्राथमिकताएं महत्वपूर्ण हैं।

वहीं भारत में अब ऐसी योजनाएं बनाने की जरूरत है कि भूखमरी न हो। मौजूदा कृषि भूमि से ही अधिक और टिकाऊ उत्पादन हासिल करना। उपज बढ़ाने का यह काम प्रकृति और पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुंचाते हुए होना चाहिए। बढ़ती आबादी के साथ खेती की जमीन पर दबाव बढ़ रहा है। ऐसे में खेती का क्षेत्र लगातार बढ़ाने के लिए जंगलों की कटाई से पर्यावरण को और अधिक नुकसान पहुंचेगा। इसलिए जरूरी यही है कि नई जमीन को खेती में लाने के बजाय मौजूदा खेतों से ही अधिक उपज हासिल की जाए। उपज बढ़ाने के लिए हमें सबसे पहले मिट्टी की सेहत जांचनी और सुधारनी होगी। दुर्भाग्य से, मिट्टी की सेहत सुधारने की कोशिशों के बावजूद भुखमरी प्रभावित क्षेत्रों में मिट्टी का बड़े पैमाने पर क्षरण आज भी कृषि उत्पादकता को कम कर रहा है। खराब मिट्टी खाद्य और पोषण सुरक्षा, ग्रामीण लोगों की आजीविका और पर्यावरणीय स्थिरता- तीनों के लिए खतरा है। इसी को ध्यान में रखते हुए अफ्रीकी नेताओं ने 24 में खाद और मिट्टी को सुधारने की दस वर्षीय कार्ययोजना को मंजूरी दी। मिट्टी की सेहत का हाल पता चल जाने के बाद उसे स्वस्थ बनाने के कई तरीके हैं- जैसे खेत को ढककर रखने वाली फसलें उगाना, एक ही खेत में अलग-अलग फसलें साथ उगाना, फसल चक्र अपनाना, पशुओं को अलग-अलग चरागाहों में बारी-बारी से चराना और गोबर एवं जैविक खादों का इस्तेमाल करना। मिट्टी को अधिक समय तक ढका रखना, जैव विविधता बढ़ाना और मिट्टी में जीवित जड़ों की मौजूदगी बनाए रखना मिट्टी की सेहत के लिए अच्छा है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

डॉलर के विकल्प का सवाल भी उठेगा ब्रिक्स सम्मेलन में

पुष्परंजन

शाओमी के बिजनेस मॉडल को लेकर चीनी सत्ता के गलियारों में घबराहट ऐसे समय हो रही है, जब शनिवार से दिल्ली में ब्रिक्स शिखर बैठक होने जा रही है। चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने गुरुवार को कहा कि चीन को उम्मीद है कि भारत वहां निवेश करने और काम करने वाली सभी देशों की कंपनियों के लिए एक निष्पक्ष, न्यायपूर्ण, पारदर्शी और बिना भेदभाव वाला बिजनेस माहौल देगा। गुओ ने साथ में इसकी भी घोषणा की कि राष्ट्रपति शी ब्रिक्स बैठक में नई दिल्ली जा रहे हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ से उन रिपोर्टों के बारे में पूछा गया था, जिनमें कहा गया था कि भारत के सीरियस फ्रॉड इन्वेस्टिगेशन ऑफिस ने शाओमी की जांच की सिफारिश की है। गुओ ने कहा कि उन्हें खास स्थिति के बारे में पता नहीं है।

भारत के सीरियस फ्रॉड इन्वेस्टिगेशन ऑफिस (एसएफआईओ) ने चीनी स्मार्टफोन कंपनी शाओमी के बिजनेस मॉडल और विदेशी निवेश नियमों के कथित उल्लंघन की एक विस्तृत जांच की सिफारिश की है। एसएफआईओ यह जांच करना चाहता है कि क्या 2020 की सीमा झड़पों के बाद चीनी निवेश पर कड़े नियमों के बावजूद शाओमी ने अनिवार्य मंजूरियां ली थीं या नहीं। कंपनी पर धन के प्रवाह और रॉयल्टी भुगतान जैसे मामलों में गड़बड़ी का संदेह है। यह प्रस्ताव अभी कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय की मंजूरी के लिए लंबित है। कोई सात साल बाद चीनी राष्ट्रपति शी भारत आ रहे हैं। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के समिट में शामिल होने पर सस्पेंस बना हुआ था, जो गुरुवार को क्लियर हो गया। चीन के लिए यह समिट इसलिए अहम है, क्योंकि यह ब्रिक्स की 20वीं सालगिरह है और यह ऐसे समय में हो रही है, जब वैश्विक शासन में अव्यवस्था बढ़ रही है। जैसे-जैसे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन नजदीक आ रहा है, दुनिया भर के शेयर बाजार के खिलाड़ियों से लेकर ताकतवर केंद्रीय बैंकों के प्रमुखों तक, सबकी नजरें इन उभरती अर्थव्यवस्थाओं के नेताओं की बैठक में होने वाले फैसलों पर टिकी हैं। इन अर्थव्यवस्थाओं को वैश्विक व्यापार और वित्तीय लेन-देन में अमेरिकी डॉलर के दबदबे के लिए खतरा माना जाता है।

धीमी प्रगति के बावजूद, डी-डॉलरलाइज़ेशन (डॉलर पर निर्भरता कम करने की प्रक्रिया) चर्चा का विषय बन गई है। इसकी मुख्य वजह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के वे बयान हैं, जिनमें उन्होंने ब्रिक्स देशों के समूह को

चेतावनी दी थी कि अगर वे वैश्विक व्यापार में डॉलर के दबदबे को खत्म करने की कोशिश करते हैं, तो उन पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाया जा सकता है। मॉस्को, नई दिल्ली या पेइचिंग में बाजार संभालने वाले सभी मंत्रियों और अधिकारियों ने बार-बार जोर देकर कहा है कि ब्रिक्स का कोई भी देश डॉलर के खिलाफ किसी तरह की वैचारिक लड़ाई नहीं लड़ रहा है। लेकिन, यह हाथी के दांत दिखाने जैसा है। भले ही ब्रिक्स शिखर बैठक में डी-डॉलरलाइजेशन पर खुलकर चर्चा न हो, लेकिन सम्मेलन के दौरान देशों के बीच होने वाली बातचीत में करेंसी स्वैप (मुद्रा की अदला-बदली) और व्यापार ढांचे पर चर्चा होने की पूरी संभावना है। मूल सदस्य देशों—भारत, रूस, चीन, ब्राज़ील और दक्षिण अफ्रीका के नेताओं के बीच और हाल ही में ब्रिक्स में शामिल हुए कई अन्य देशों, जैसे ईरान, सऊदी अरब, मिस्र, इंडोनेशिया, यूएई और इथियोपिया, के नेताओं के साथ कई महत्वपूर्ण द्विपक्षीय बातचीत होने की उम्मीद है। वर्ष 2024 में ब्रिक्स देशों के बीच आपसी व्यापार का मूल्य 1.17 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर आंका गया था। माना जाता है कि यह सालाना औसतन 13 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। दुनिया के कुल निर्यात में ब्रिक्स की हिस्सेदारी 24 प्रतिशत है। मगर, राष्ट्रीय मुद्राओं में भुगतान निपटाने की दिशा में ब्रिक्स देशों के विभिन्न कदम, जैसे भारत और रूस के बीच रुपया-रूबल समझौता या डॉलर के बजाय युआन में व्यापार करने की चीन की कोशिशें, जितनी कारगर होनी चाहिए थीं, हुई नहीं।

साल 2000 में, सभी देशों के कुल विदेशी मुद्रा भंडार का लगभग 71 प्रतिशत हिस्सा डॉलर के रूप में रखा जाता था। 2026 तक यह घटकर लगभग 57 फीसदी रह गया है। अर्थात, 'टाइगर अभी जिंदा है' की तर्ज पर डॉलर अभी जिंदा है। भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति बनाने वाली टीम के एक सदस्य ने नाम न बताने की शर्त पर कहा, 'यह साफ तौर पर दिखाता है कि कई देशों के केंद्रीय बैंकर डॉलर का भारी भंडार रखने से जुड़े भू-राजनीतिक जोखिमों को बांटने के लिए या तो दूसरी मुद्राएं या फिर सबसे सुरक्षित निवेश, यानी बुलियन (सोना), खरीद रहे हैं।'

देशज ज्ञान में हैं संकट से बचाव के उपाय

वीरेंद्र कुमार पैन्यूली

हम हिमालय या अन्यत्र भी प्राकृतिक संसाधनों का जितना उपभोग या अपव्यय कर रहे हैं, उतना प्राकृतिक रूप से पैदा नहीं हो रहा है। जैव विविधता के मामले में उपभोग या पर्यावरणीय आघातों से जो जैविक जातियां-प्रजातियां संकट में पहुंच गई हैं या समाप्त हो गई हैं, उनकी भरपाई मुश्किल है। क्षेत्रीय आधार पर तो कई जड़ी-बूटियां अतिदोहन के बाद स्थापित ही नहीं हो रही हैं। यह ईकोसिस्टम सेवा क्षमताओं व प्रवाहों पर प्रतिकूल असर डालता है। कई रणनीतियों या चल रहे कार्यक्रमों को मौसम में हो रहे बदलाव प्रभावित कर रहे हैं। किसी आपदा के बाद जब सरकार अध्ययन कराने की बात करती है, तो वह राजनीतिक रूप से उस समस्या को टालने की प्रक्रिया होती है। जैसे तब तक बरसातें रुक जाती हैं या जंगलों में लगी आग मौसमी कारणों से बुझ जाती हैं। सड़कों के एलाइनमेंट के मामले में भी ऐसा होता है।

राजनेता उन क्षेत्रों में सड़क ले जाने के लिए वोट बैंक के कारण दबाव डालते रहते हैं, जिन क्षेत्रों में सड़क ले जाने से जलस्रोतों और वनों को हानि पहुंच सकती है या नए भूस्खलन क्षेत्र बन सकते हैं। नदी से दूर निर्माण करने के सुझाव ही नहीं माने जाते हैं। इसके लिए तो राजनीतिज्ञ इस हद तक जा सकते हैं कि वे उन सभी दलीलों को जुटा देते हैं, जिनसे बुग्यालों को बुग्याल मानने से ही इनकार कर दिया जाए। नदियों की चौड़ाई पर ही सवालिया निशान लगा देते हैं। बांध जलाशय बन गए तो उनमें मनमाने स्तर तक पानी भरवाने में गुरेज नहीं करते या उस तथ्य की अनदेखी कर देते हैं। इस समय दस राष्ट्रों और लगभग 1.90 अरब लोगों को हिमालय से सेवाएं मिलती हैं। स्थानीय लोगों के ईकोसिस्टम संबंधी ज्ञान का लाभ नहीं लिया जा रहा है। यदि स्थानीय समुदाय को काम दिया जाए और उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो तो ईकोसिस्टम के पुनर्वास की कीमत कम हो सकती है।

नई टेक्नोलॉजी से होने वाले नुकसान कम किए जा सकते हैं और आर्थिकी व पारिस्थितिकी, दोनों को मदद मिल सकती है। पारंपरिक बीज संरक्षण की जानकारी स्थानीय समुदाय आपको दे सकता है। यह पहाड़ी खेती में जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक सहनशीलता और अनुकूलन क्षमता ला सकता है। आपदाओं के बीच बचे रहने के लिए स्थानीय स्तर के ज्ञान, तकनीकों व अनुभवों का डॉक्यूमेंटेशन और सामयिक उपयोग करने से भविष्य में स्थानीय समुदायों में ज्ञान-कौशल की कुछ विशिष्टताएं भी पनप सकती हैं। बाहरी जगत से संपर्कों के अभाव में दुर्गम क्षेत्रों में अपनी सुरक्षा व रोजमर्रा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें आविष्कार व नवाचार करने ही पड़ते हैं। दुरूह, दुर्गम पहाड़ों में रहने वाले लोगों के लिए पीढ़ियों व सदियों से वहां विपरीत परिस्थितियों में भी जिंदा रहने के लिए स्थानीय स्तर पर काम के तौर-तरीकों, औजारों व ज्ञान को विकसित करना और सहेजना आवश्यक रहा है। ऐसे उदाहरण भी हैं, जब भूकम्पों में भी पीढ़ियों पुराने पहाड़ी मकान या अन्न भंडारण संरचनाएं बची रह जाती हैं। या सूखा, अकाल या अन्य मौसम की मारों के बीच भी स्थानीय लोग पहाड़ों के खेतों व जंगलों में कुछ ऐसा पैदा हुआ पहचान लेते हैं, जिसे स्थानीय निवासी बचे रहने के लिए खा सकते हैं।

पहाड़ी आपदाओं से बचाव व राहत में इनसे मदद मिल सकती है। इस तरह का देशज ज्ञान स्थानीय स्तर पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी झेली जाने वाली प्राकृतिक आपदाओं के संदर्भों व अनुभवों से ही उपजता है। इसे पिछली पीढ़ियां आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचा देती हैं। अब ऐसे ज्ञान की थाती की निरंतरता बनाए रखना मुश्किल हो रहा है। पहाड़ों से भारी मात्रा में पलायन भी इसका एक कारण है। बाजारी व्यवस्थाओं से ही जरूरतों के पूरा होने तथा कई प्रकार के प्रतिबंधों के कारण प्राकृतिक क्षेत्रों व संसाधनों से लोगों का दुराव होने के कारण भी पर्वतीय समुदाय के प्रकृति को समझने के अवसरों में कमी आई है। इससे प्रासंगिक आपदा प्रबंधन के देशज ज्ञान की थाती भी सिमटी है। भूगर्भ वैज्ञानिकों के अनुसार हिमालयी पहाड़ संवेदनशील संतुलन में हैं। यहां आपदाओं से सहज प्रभावित होने वाली संरचनाएं हैं। भू-उपयोग परिवर्तन भूपारिस्थितिकी, भू-संस्कृति और लोगों की मांगों व पसंद में भी अंतर ला रहा है।

स्थानीय लोग जब बाहर की चीजें मांगेंगे तो निर्भरता बढ़ेगी। जब बादल फटता है या भीषण बरसात आती है, तो सड़कों की मोड़दार, तेज ढालों से पानी के बहाव और उसकी शक्ति में अप्रत्याशित तेजी आती है। इससे नीचे के मकानों, खेतों, मैदानों और सूखे नालों में बजरी, पत्थर व मलबा भारी मात्रा में आकर नुकसान कर देता है। सड़कों को पहाड़ों से काटते वक्त पहाड़ों का स्थिर प्राकृतिक ढलान बिगड़ जाता है। ये अस्थिर ढलान बादल फटने के समय लगातार भूस्खलन वाले क्षेत्र बन जाते हैं। हिमालयी विकास केवल विज्ञान और टेक्नोलॉजी का विषय नहीं है। यह ज्ञान, अनुभव व पारंपरिकता का भी विषय है। वहां के रहने वाले अपने-अपने स्तर पर जिन तौर-तरीकों से बचे रहना चाहते हैं, उन पर अपना विज्ञान न थोपें। जिन तरीकों से वे सफलता से बचे रह रहे हैं, हिमालय से कम-से-कम संसाधन लेते हुए उनके पीछे के विज्ञान को समझिए। तब उनके लिए मददगार वातावरण बनाएं।

बच्चों की सेहत पर असर डाल रहा है लैपटॉप

बच्चों की ऑनलाइन क्लास हो या फिर ऑफिस का काम, लैपटॉप हमारे रोजमर्रा के जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है। मेडिकल रिपोर्ट्स में लगातार स्क्रीन टाइम बढ़ने और इससे सेहत को होने वाले नुकसान को लेकर अलर्ट किया जाता रहा है, पर लैपटॉप जैसे डिवाइस से खतरा मात्र स्क्रीन टाइम तक सीमित नहीं है। इनके इस्तेमाल को लेकर बरती गई जरा सी भी लापरवाही आपके लिए कई और तरह की मुश्किलों को बढ़ाने वाली हो सकती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने खासतौर पर उन लोगों को अलर्ट किया है जो गोद में या फिर पेट पर लैपटॉप रखकर इस्तेमाल करते हैं। ब्रिटेन में सामने आया एक बच्चे का मामला इसी वजह से चर्चा में है। बच्चा घर से पढ़ाई करता था और दिन में करीब आठ घंटे तक लैपटॉप का इस्तेमाल करता था। समस्या यह थी कि वह लैपटॉप को मेज पर रखने के बजाय सीधे अपने पेट पर रखकर पढ़ाई करता था। कई बार लैपटॉप चार्जिंग पर लगा होता था। कुछ समय बाद उसके पेट पर अजीब तरह के निशान दिखाई देने लगे। ये निशान सामान्य लाल चकत्तों जैसे नहीं थे, बल्कि त्वचा पर जाल जैसी आकृति बना रहे थे। मामला देखने में इतना गंभीर था कि डॉक्टरों को शुरुआत में लिवर से जुड़ी समस्या तक का संदेह हुआ। खून की जांच और स्कैन हुए, लेकिन किसी से भी पता नहीं चला कि ये दिक्कत असल में है क्या? फिर कुछ ही समय बाद बच्चा जब दोबारा अस्पताल पहुंचा तो इस बार निशान और ज्यादा फैल चुके थे और कुछ हिस्से की स्किन उतरने भी लगी थी। डॉक्टरों ने जब उसकी रोजमर्रा की आदतों के बारे में विस्तार से पूछा, तब एक ऐसी बात सामने आई जिसने पूरी तस्वीर बदल दी।

'एरिथेमा एब इग्ने' की समस्या

आसान भाषा में समझें तो त्वचा पर लंबे समय तक पड़ने वाली हल्की गर्मी वैसे तो तुरंत जलन, तेज दर्द या छाले नहीं पैदा करती। लेकिन लगातार गर्मी के कारण से त्वचा के अंदर मौजूद बहुत छोटी रक्त वाहिकाओं और ऊतकों को नुकसान पहुंच सकता है। इसके कारण त्वचा में रंगत पैदा करने वाला पदार्थ जमा होने लगता है और वहां लाल, भूरा या गहरा जाल जैसा निशान दिखाई देने लगता है। कुछ मामलों में त्वचा पर पपड़ी पड़ सकती है या त्वचा उतरने भी लगती है। पहले यह समस्या उन बुजुर्ग लोगों में देखी जाती थी जो लंबे समय तक खुले अंगीठी या आग के पास बैठते थे। डॉटरों का कहना है कि अब बच्चों और युवाओं में भी यह समस्या दोबारा बढ़ती दिखाई दे रही है। इसकी एक वजह इलेट्रॉनिक उपकरणों का बढ़ता इस्तेमाल हो सकता है।

पेट पर रखकर लैपटॉप चलाते रहना पड़ा भारी

एक स्थानीय मीडिया रिपोर्ट में इस मामले का जिक्र मिलता है, जिसके आधार पर डॉक्टरों ने सभी लोगों को अलर्ट किया है। डॉक्टरों ने लैपटॉप का लंबे समय तक इस्तेमाल करने को लेकर चेतावनी दी है। ब्रिटेन के यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल्स ऑफ लीसेस्टर एनएचएस ट्रस्ट के डॉक्टरों ने इस बच्चे के केस की जानकारी दी है। लिवर और शरीर की दूसरी जांच में भी जब स्थिति का सही से पता नहीं चल पाया और समस्या बढ़ती गई तो डॉक्टरों ने दोबारा केस को शुरू से देखना शुरू किया। इसमें पता चला कि लंबे समय तक पेट पर लैपटॉप रखकर चलाने से उसे 'टोस्टेड स्किन सिंड्रोम' नाम की समस्या हो गई थी। इसमें त्वचा पर जाल जैसी आकृति के निशान बन जाते हैं। यह समस्या तब होती है जब त्वचा लंबे समय तक किसी गर्म चीज के संपर्क में रहे। इस बीमारी को मेडिकल भाषा में 'एरिथेमा एब इग्ने' भी कहा जाता है।

लैपटॉप का सावधानी से करें इस्तेमाल

इस घटना के बाद डॉक्टरों ने सभी लोगों को सलाह दी है कि लैपटॉप को सीधे शरीर पर रखकर इस्तेमाल न करें। अगर आपके शरीर के किसी हिस्से पर निशान बन रहे हैं तो उसे अतिरिक्त गर्मी के संपर्क में आने से बचाना चाहिए। डॉक्टरों का कहना है कि अगर समस्या की शुरुआत में ही पहचान हो जाए तो खतरे को कम किया जा सकता है।

पिछले साल जापान के डॉक्टरों ने भी चेतावनी दी थी कि लंबे समय तक स्मार्टफोन पर गेम खेलने से एक गंभीर स्थिति का खतरा हो सकता है, जिसे 'ड्रॉप्ड हेड सिंड्रोम' कहा जाता है। इसमें व्यक्ति का सिर आगे की ओर झुक जाता है और उसे सीधा रखने में परेशानी हो सकती है।

क्या कहते हैं डॉक्टर?

बीएमजे केस रिपोर्ट्स में प्रकाशित इस मामले में डॉक्टरों ने बताया कि शुरुआत में उन्हें बच्चे की त्वचा पर बने निशान देखकर लिवर से जुड़ी समस्या का संदेह हुआ। निशान देखने में काफी चिंताजनक थे, लेकिन खून की जांच और स्कैन में किसी गंभीर समस्या के संकेत नहीं मिले। दो सप्ताह बाद बच्चा फिर अस्पताल पहुंचा और इस बार त्वचा की समस्या पहले से ज्यादा बढ़ चुकी थी।

अब निशान उसके पेट के बड़े हिस्से में फैल गए थे। त्वचा में इतनी जलन और परेशानी हो रही थी कि कुछ जगहों से स्किन उतरने लगी थी।

इसके बाद डॉक्टरों ने बच्चे से उसकी रोजमर्रा की दिनचर्या के बारे में ज्यादा विस्तार से पूछा। यहीं से समस्या की असली वजह सामने आई।

बच्चे ने बताया कि वह घर से पढ़ाई के लिए कई घंटों तक लैपटॉप का इस्तेमाल करता था।

लैपटॉप को मेज पर रखने के बजाय वह उसे सीधे अपने पेट पर रखकर इस्तेमाल करता था। ऐसा वह रोजाना करीब आठ घंटे तक करता था।

हंसना मना है

टीचर : कल मैं सूरज पर लैक्चर देने जा रही हूं, तुम लोग क्लास मिस मत करना।
पप्पू : लेकिन मैं नहीं आ पाऊंगा मैडम..
टीचर : क्यूं पप्पू : वो क्या है कि मेरी मम्मी मुझे इतनी दूर नहीं जाने देंगी।

बीमार पप्पू को देखने उसकी टीचर उसके घर आईं। टीचर ने देखा कि मोनू बिस्तर पर सिर के बल खड़ा हुआ है। टीचर : मैंने सुना था कि तुम बीमार हो पर तुम तो शीर्षासन कर रहे हो! पप्पू : मैम बीमार ही हूं। अभी सिरदर्द की गोली खाई है, कहीं गलती से पेट में न चली जाए, इसलिए सिर के बल खड़ा हूं!

टीचर गुस्से में : पप्पू यहां मैं पढ़ा रही हूं और तुम बाते कर रहे हो? पप्पू, टीचर से : यहां हम बातें कर रहे हैं और आप हमें पढ़ाने में लगी हैं!

टीचर : अपने पापा का नाम अंग्रेजी में बोलो? स्टूडेंट : ब्यूटिफुल रेड अंडरवियर!
टीचर : क्या बकवास है हिंदी में बताओ?
स्टूडेंट : सुंदर लाल चड्ढा

कहानी | पप्पू और काना नौकर

मेरे घर में एक नौकर है। नाम तो उसका पप्पू है लेकिन मैं उसे काना कहकर बुलाता हूँ। क्योंकि उसकी एक आँख खराब है। मेरी तरफ देखता है तो लगता है कि दूसरी तरफ देख रहा है और दूसरी तरफ देखता है तो लगता है मेरी तरफ देख रहा है। कोई भी बात होगी, अपनी बात कहने से वो नहीं चूकता है। बहुत बोलता है। दिन भर बक-बक किये रहता है। फिल्म, रसोई घर पढ़ाई-लिखाई तथा आस-पड़ोस के साथ-साथ दुनिया में क्या हो रहा,सबकी खबर रखता है। मुहल्ले की हर नई खबर हमें पप्पू ही बताता है। घर का काम-धाम भी अच्छे ढंग से करता है। घर में सब उसे प्यार करते हैं लेकिन मेरी उससे बिल्कुल नहीं पटती है। काना है लेकिन अपने को किसी फिल्मी हीरो से कम नहीं समझता है। मैं उसे बात-बात पर काना कहता रहता हूँ। या यूं समझिये मैंने उसे कभी पप्पू कहा ही नहीं। मैंने अपनी तरफ से उसे काना नाम ही दे दिया है। मैं उसे काना कहता हूँ तो वह बुरा नहीं मानता। मुझसे प्रेम से ही बोलता है। एक बार उसने मुझसे पूछा भी था कि मेरा पप्पू नाम अच्छा नहीं लगता क्या आपको? मैंने कहा पप्पू नाम ठीक है लेकिन काम के अनुसार या रंग रूप के अनुसार नाम हो तो और अच्छा लगता है। अब देखो मेरा नाम चिराग है क्योंकि मैं इस घर का इकलौता लड़का हूँ। तुम आँख से काने हो इसलिए तुम्हारा काना नाम तुम्हारे लिए एकदम ठीक है। इसके बाद उसने कभी मुझसे काना कहने की शिकायत नहीं की। मैं उसे काना कहता हूँ तो मुझे बहुत मजा आता है। एक दिन मैं साइकिल से बाजार जा रहा था। एक जीप ने धक्का मारा और मैं घायल हो गया। कुछ लोगों ने मुझे उठा कर अस्पताल में भर्ती किया। पता चला कि मेरे एक पैर में गम्भीर रूप से चोट आयी है। डाक्टर ने बताया कम से कम चार-पाँच महीने तो बिस्तर पर लग ही जायेंगे। एक हफ्ते बाद मैं अस्पताल से घर आया। मम्मी के कहने पर पप्पू मुझे सेव देते हुए बोला-बहुत दुःख की बात है छोटे साहब! आपका एक पैर खराब हो गया। पप्पू ने ऐसा कहा तो मुझे लगा कि वो मुझे लंगड़ा कहकर चिढ़ा रहा है। मन ही मन मुझे बहुत बुरा लगा, लेकिन मैं उसे डाँटता कैसे, उसने तो मुझे खुले शब्दों में लंगड़ा भी नहीं कहा था और फिर पता नहीं उसने ये बात मुझे चिढ़ाने के लिए कही थी या सहानुभूति वश कही थी। जो भी हो पप्पू ने तीन महीने तक मेरी सेवा की और मैं तीन महीने में ही चलने लायक हो गया। ये सब पप्पू को सेवा का परिणाम था। उस दिन से मैंने उसे काना बोलना छोड़ दिया।

कहानी से सीख : सच्ची सेवा और निष्ठा के माध्यम से ही किसी के प्रति सम्मान और समझ विकसित होती है। बाहरी विशेषताओं से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी की सेवा और योगदान होता है।

3 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

कार्यस्थल पर आपकी बारीकी और व्यवस्थित कार्यशैली की तारीफ होगी। नया व्यापारिक सौदा पक्का हो सकता है। पार्टनर की भावनाओं को प्राथमिकता दें।

वृषभ
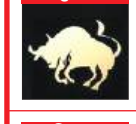
नौकरी में आत्मबल मजबूत रहेगा। व्यापारिक विस्तार की योजनाएं मूर्त रूप ले सकती हैं। व्यस्तता के बीच साथी के लिए समय न निकालने पर हल्की नाराजगी हो सकती है।

मिथुन

जिम्मेदारियां बढ़ेंगी लेकिन वरिष्ठों का मार्गदर्शन काम आएगा। व्यापार में उधारी देने से बचें। जीवनसाथी के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ाव महसूस करेंगे।

कर्क

एकाग्रता से काम करने पर सफलता आपके कदम चूमेगी। पुराने सौदों से आर्थिक लाभ होगा। आपसी विश्वास और भावनात्मक संबंध गहरे होंगे।

सिंह

आपकी व्यावहारिक सोच और अनुशासन कार्यक्षेत्र में सफलता दिलाएगा। व्यापार में नई रणनीति कारगर साबित होगी। दांपत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी।

कन्या

वरिष्ठ अधिकारी आपके काम से प्रसन्न होंगे। व्यापार में पुराने ग्राहकों से फिर से अच्छा ऑर्डर मिल सकता है। पार्टनर के साथ भविष्य को लेकर सार्थक बातचीत होगी।

तुला

सहकर्मियों के साथ तालमेल बिठाकर काम करने से बड़ा लाभ होगा। व्यापारिक वादों को समय पर पूरा करें। प्रेम जीवन में मिठास बनी रहेगी। धन की आवक अच्छी रहेगी।

वृश्चिक

आपकी क्रिएटिविटी रंग लाएगी। किसी बड़े व महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी मिलेगी। कारोबार है तो नए ग्राहक और नए अवसर मिलने के स्पष्ट संकेत हैं।

धनु
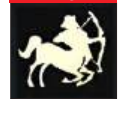
डिजिटल और आईटी सेक्टर वालों के लिए बड़ा अवसर मिल सकता है। संचार तकनीकों से व्यापार में प्रगति होगी। पुरानी गलतफहमियों का अंत होगा और आपसी प्रेम बढ़ेगा।

मकर

कार्यक्षेत्र में आपका फोकस बेहतरीन रहेगा। नए अनुबंधों पर हस्ताक्षर करने से पहले शर्तों को ध्यान से पढ़ें। लव पार्टनर के साथ गंभीर मुद्दों पर सहमति बनेगी।

कुम्भ

नौकरी में आपके कार्य की प्रशंसा होगी। आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल से आप कारोबार में आगे रहेंगे। साथी के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण रहेगा।

मीन

नौकरी में शिक्षा, कंसल्टेंसी और मीडिया से जुड़े लोगों को लाभ। विदेशी व्यापार से जुड़े लोगों को शानदार परिणाम मिलेंगे। विस्तार की योजना बनेगी।

इतने सारे अच्छे कलाकार के बाद भी फिल्म बिखरी-बिखरी

रिव्यू: फिल्म हैवान

अक्षय कुमार और सैफ अली खान जैसे दो बड़े सितारे निर्देशक प्रियदर्शन नाम है हैवान अब इतने बड़े नाम एक साथ हों तो दर्शक थिएटर में यही सोचकर जाएगा कि कुछ जबरदस्त देखने को मिलेगा। खासकर जब कहानी में हत्या है, रहस्य है, एक दृष्टिहीन आदमी है पुलिस है पीछा है और एक खतरनाक अपराधी है। लेकिन हैवान देखते हुए सबसे बड़ा सवाल यही उठता है कि इतने सारे अच्छे कलाकार, इतनी संभावनाओं वाली कहानी और इतना बड़ा सेटअप होने के बावजूद फिल्म इतनी लंबी और बिखरी हुई क्यों लगती है।

मलयालम फिल्म ओप्पम का हिन्दी रूपांतरण है हैवान

हैवान प्रियदर्शन की मलयालम फिल्म ओप्पम् का हिन्दी रूपांतरण है। मूल कहानी अपने आप में दिलचस्प है। एक दृष्टिहीन आदमी ऐसी घटनाओं के बीच फंस जाता है। जहां उसे अपनी बाकी इंद्रियों और समझ के सहारे सच तक पहुंचना है। सामने एक अपराधी है। पुलिस है एक बच्ची है। हत्या और बदले की कहानी है। यानी थ्रिलर बनाने के लिए लगभग हर जरूरी चीज मौजूद है।

कहानी में कम और उसे पर्दे पर पेश करने के तरीके में ज्यादा दिक्कत

फिल्म पौने तीन घंटे से भी ज्यादा खिंचती है और यही इसकी सबसे बड़ी कमजोरी बन जाती है। थ्रिलर फिल्म में दर्शक चाहता है कि हर दस-पंद्रह मिनट में कहानी कोई नया सवाल खड़ा करे। उसे लगे कि अब क्या होगा। असली अपराधी कैसे पकड़ा जाएगा। अगला शिकार कौन होगा। नायक इस मुश्किल से कैसे निकलेगा।

कहानी आगे बढ़ने के बजाय आगे बैठ जाती है

कभी शादी- ब्याह के दृश्य शुरू हो जाते हैं। कभी गाना आ जाता है। कभी कोई दूसरा ट्रैक खुल जाता है। कभी कॉमेडी का मूड बनने लगता है। आप अपराध और रहस्य वाली कहानी देख रहे होते हैं और अचानक फिल्म का मिजाज बदल जाता है। यही वजह है कि फिल्म का पहला हिस्सा खास तौर पर धीमा महसूस होता है। सस्पेंस बनने में वक्त लगता है और जब तक कहानी रफ्तार पकड़ती है, दर्शक काफी समय खर्च कर चुका होता है।

सैफ अली खान

सैफ फिल्म में एक दृष्टिहीन व्यक्ति की भूमिका निभा रहे हैं। अभिनय के स्तर पर वे फिल्म की मजबूत कड़ियों में हैं। उन्होंने अपने किरदार को

जरूरत से ज्यादा बेचारा बनाने की कोशिश नहीं की,उनका चलनाए चीजों को महसूस करनाए आवाजों पर प्रतिक्रिया देना और आसपास के माहौल को समझना कई दृश्यों में प्रभावी है। लेकिन समस्या तब पैदा होती है जब फिल्म उनसे ऐसे एक्शन करवाने लगती है जिन पर यकीन करना मुश्किल हो जाता है। एक दृष्टिहीन व्यक्ति कई हट्टे-कट्टे पुलिसवालों से भिड़ रहा है और उन्हें जबरदस्त तरीके से पीट रहा है। सिनेमा में कल्पना की छूट होती हैए बिल्कुल होती है। लेकिन थ्रिलर तभी असर करता है जब दर्शक कम से कम उस दुनिया के नियमों पर विश्वास कर सके जो फिल्म ने खुद बनाई है। अगर हर मुश्किल का समाधान हीरो के अचानक सुपरहीरो बन जाने से होना है। तो फिर उसके दृष्टिहीन होने से पैदा होने वाला तनाव ही कम हो जाता है।

अक्षय कुमार

अक्षय इस बार नकारात्मक किरदार में हैं। कोशिश यह है कि दर्शक उन्हें उनके सामान्य हीरो वाले अंदाज से अलग देखे। मगर हैवान

नाम सुनकर जिस खतरनाक, डरावने और बेचैन कर देने वाले विलेन की कल्पना होती है वह प्रभाव पूरी तरह पैदा नहीं होता। अक्षय कुमार स्क्रीन पर मौजूद रहते हैं,उनकी स्टार पावर भी दिखाई देती हैए लेकिन किरदार आपके भीतर वह डर पैदा नहीं करता जो ऐसे सायको किलर से होना चाहिए। अगर सामने का अपराधी वास्तव में बेहद खतरनाक महसूस होता। तो सैफके किरदार की बेबसी और उससे लड़ने की कोशिश कहीं ज्यादा रोमांचक हो सकती थी। बोमन ईरानी फिल्म में रिटायर्ड न्यायाधीश की भूमिका में हैं। उनका किरदार कहानी को कुछ गंभीरता देता है और अभिनय के मामले में वे भरोसेमंद लगते हैं।

सैयामी खेर

फिल्म में सैयामी खेर पुलिस अधिकारी के रूप में दिखाई देती हैं। श्रिया पिलगांवकर का घरेलू हिंसा और पारिवारिक

समस्याओं से जुड़ा ट्रैक है। राजेश शर्मा और मनोज जोशी जैसे अच्छे कलाकार भी हैं। असरानी और राजपाल यादव भी फिल्म का हिस्सा हैं। समस्या उल्टी है। फिल्म में इतना कुछ डाल दिया गया है कि मुख्य कहानी को सांस लेने की जगह कम मिलती है। एक अच्छी थ्रिलर में हर किरदार का कोई स्पष्ट उद्देश्य होना चाहिए। हर दृश्य को कहानी आगे बढ़ानी चाहिए अगर किसी दृश्य को निकाल देने के बाद भी कहानी पर कोई खास फर्क नहीं पड़ता, तो वह दृश्य फिल्म की रफ्तार पर बोझ बन जाता है।

लॉजिक को लेकर भी परेशान करते हैं सवाल

एक बेहद पॉश हाउसिंग सोसाइटी में एक दृष्टिहीन व्यक्ति मेंटेनेंस मैनेजर है। संभव हैए और ऐसा होना अपने आप में सकारात्मक बात भी हो सकती है, लेकिन फिल्म को इस व्यवस्था को दर्शक के सामने थोड़ा विश्वसनीय बनाना चाहिए थ। इसी तरह एक रिटायर्ड चीफजस्टिस जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति के घर की सुरक्षा को लेकर भी सवाल उठते हैं। कहानी को आगे ले जाने के लिए कई बार परिस्थितियां इतनी सुविधाजनक बना दी जाती हैं कि दर्शक कहानी देखने के बजाय लेखक के फैसलों पर सवाल करने लगता है। क्योंकि थ्रिलर में दर्शक को कहानी के अंदर होना चाहिए कहानी के बाहर खड़े होकर उसकी कमियां नहीं गिननी चाहिए। प्रियदर्शन हिन्दी सिनेमा को कई यादगार फिल्में दे चुके हैं। कॉमेडी हो या ड्रामाए उन्हें दर्शकों की नब्ज समझने वाला निर्देशक माना जाता रहा ह। इसलिए हैवान से उम्मीद भी ज्यादा थी। मगर यहां ऐसा लगता है कि मूल कहानी की सादगी और तनाव के ऊपर हिन्दी फिल्म का बहुत सारा अतिरिक्त सामान लाद दिया गया है।

सस्पेंस और कसावट में कमी

गाने भी चाहिए, कॉमेडी भी चाहिए, पारिवारिक ड्रामा भी चाहिए,एक्शन भी चाहिए,स्टार वाला अंदाज भी चाहिए, इमोशन भी चाहिए। नतीजा यह होता है कि जिस चीज की सबसे ज्यादा जरूरत थी, यानी सस्पेंस और कसावट वही पीछे छूट जाती है। अगर इस फिल्म को निर्ममता से एडिट करके लगभग दो घंटे के आसपास रखा जाता। गैरजरूरी हिस्से हटाए जाते और अक्षय कुमार के किरदार को ज्यादा रहस्यमय तथा खतरनाक बनाया जाताए तो शायद यही फिल्म काफी ज्यादा प्रभावी हो सकती थी। कहानी में दम है। कलाकार अच्छे हैं। सैफअली खान ने मेहनत की है। बोमन ईरानी प्रभावित करते हैं। अक्षय कुमार ने अपनी सामान्य छवि से अलग जाने की कोशिश भी की है।

हमारी तरफ से हैवान को पांच में से ढाई स्टार

फिल्म केवल अच्छे कलाकारों से नहीं बनती

फिल्म की असली जान उसका स्क्रीनप्ले होता है। और हैवान की सबसे बड़ी परेशानी यही है कि वह दर्शक को लगातार अपनी गिरफ्त में नहीं रख पाती। जिस फिल्म के नाम में ही हैवान हो उससे उम्मीद होती है कि वह आपको सीट के किनारे पर बैठा देगी यहां कई जगह मामला उल्टा है। सीट इतनी आरामदायक लगने लगती है कि नींद से लड़ना पड़ सकता है। तो अगर आप अक्षय कुमार या सैफअली खान के जबरदस्त प्रशंसक हैं। तो अपनी पसंद के सितारों के लिए फिल्म देख सकते हैं। लेकिन अगर आप एक बेहद कसी हुई क्राइम थ्रिलर की उम्मीद लेकर जा रहे हैं,तो उम्मीदों को थोड़ा नीचे रखिए। हैवान् के पास कहानी थी, सितारे थे, निर्देशक था और पूरा मसाला था। बस कमी रह गई उस एक चीज कीए जो थ्रिलर के लिए सबसे जरूरी होती है।

सलमान खान फिल्म्स पर भड़के अमाल मलिक

अमाल मलिक ने फिल्म 'हीरो' की 11वीं सालगिरह पर सलमान खान फिल्म्स की सोशल मीडिया पोस्ट पर नाराजगी जताई। उन्होंने पोस्ट में संगीतकार और गीतकार को क्रेडिट नहीं देने पर प्रोडक्शन हाउस को घेरा।

दरअसल, सलमान खान फिल्म्स ने 2015 में रिलीज हुई 'हीरो' की सालगिरह मनाई थी। इस फिल्म से सूरज पंचोली और अथिया शेट्टी ने बॉलीवुड डेब्यू किया था।

अमाल ने सलमान खान फिल्म्स के आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट @skfilmsofficial के कमेंट सेक्शन में लिखा, जिसने भी यह पेज या सोशल मीडिया संभाला है, मुझे उस ऑडेसिटी से प्यार है, जो आपने गाने के संगीतकार और गीतकार को छोड़कर दिखाई है। उन्होंने आगे लिखा, यह अच्छी बात नहीं लगती कि किसी संगीतकार और उसके गीतकार की मेहनत, खून, पसीने और आंसुओं से बने गाने का जश्न मनाया जाए, लेकिन उसके रचनाकारों का सम्मान या जिक्र तक न हो।

अमाल ने टीम को बुनियादी बातें सीखने की सलाह दी। उन्होंने लिखा, बेसिक चीजें करना सीखिए, वरना यह पेज डिलीट कर दीजिए। अमाल ने टीम से उनका कमेंट नहीं हटाने की अपील भी की। उन्होंने लिखा, मेरा कमेंट डिलीट मत करना। सलमान सर को भी इसे देखने दो, ताकि उन्हें पता चले कि आप लोगों ने गलती की है। फिल्म 'हीरो' के साउंडट्रैक को अमाल मलिक, मीट ब्रदर्स अंजन, सचिन-जिगर और जस्सी कट्यिाल ने कंपोज किया था। हालांकि, अमाल मलिक के कमेंट के बाद सलमान खान फिल्म्स की टीम ने अपनी गलती सुधारी। उन्होंने पोस्ट को एडिट करके अमाल मलिक के आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट को टैग किया और उन्हें व गीतकार कुमार को उनका जायज क्रेडिट दिया।

एसआईआर प्रक्रिया पर फिर नाराज हुए प्रकाश राज

प्रकाश राज ने बीते महीने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए एक बड़ा दावा करते हुए एसआईआर प्रक्रिया पर तंज कसा था। उन्होंने कहा था कि वोटर लिस्ट से उनका नाम कट गया है। प्रकाश राज ने दावा किया कि बंगलूरू निर्वाचन क्षेत्र से उनका वोटिंग राइट डिलीट कर दिया गया है और ऐसा एसआईआर की प्रक्रिया के बाद हुआ है। अब एक बार फिर उन्होंने एसआईआर प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए इसे घोटाला कहा है।

कर्नाटक में SIR ड्राफ्ट पर एक्टर प्रकाश राज कहते हैं, छह महीने का नोटिस दें। उन्हें मौका दें। नोटिस दो दिन पहले, एक दिन पहले भेजे गए हैं। नोटिस में वे दो डॉक्यूमेंट मांगते हैं। जब आप जाते हैं, तो आपसे छह-सात डॉक्यूमेंट के लिए परेशान किया जाता है। अब मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार की मां के बूथ को ही देख लीजिए। फाइनल ड्राफ्ट में अंग्रेजी और कन्नड़ में नाम अलग-अलग हैं। पति का नाम अलग है। कन्नड़ में अलग है। अंग्रेजी में पते अलग हैं। यह क्या ड्रामा हो रहा है?

समाचार एजेंसी एएनआई से बात करते हुए प्रकाश राज ने कहा, उन्होंने 20 अगस्त को वादा किया था कि हटाए गए वोटरों की लिस्ट हर बूथ पर लगाई जाएगी। ग्राम पंचायत सभाएं होंगी। एक भी ग्राम पंचायत सभा नहीं हुई। वे ऐसा सिर्फ इसलिए कर रहे हैं, ताकि कल कोर्ट में कह सकें कि हमने कोशिश की थी। ऐसा नहीं होना चाहिए। इससे साबित होता है कि यह एक घोटाला है। वे सुनने वाले नहीं थे। 20 से 30 तारीख तक, सिविल सोसाइटी के तौर पर, हम कर्नाटक के 10 अलग-अलग जिलों का दौरा करेंगे। अलग-अलग बूथों पर जाएंगे और अपना सोशल ऑडिट करेंगे।

केडीए के उपाध्यक्ष पूरे तेवर में

» तीन कर्मचारियों पर गिराई गाज

भ्रष्टाचार पर अंकुर कौशिक का बड़ा एक्शन

प्रांजुल मिश्रा/4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। कानपुर विकास प्राधिकरण-केडीए के उपाध्यक्ष अंकुर कौशिक ने भ्रष्टाचार और अनियमितताओं के मामलों में सख्त कार्रवाई करते हुए तीन कर्मचारियों पर गाज गिराई है। इनमें मुख्य रूप से केडीए वीसी के पूर्व पीए और वरिष्ठ लिपिक कश्यप कांत दुबे के खिलाफ हुई है। विवादित भूखंड को दोबारा आवंटित किए जाने के मामले में प्रारंभिक जांच में दोषी पाए जाने के बाद दुबे को निलंबित कर दिया गया है। उनके खिलाफ अब विभागीय जांच भी होगी। इसके अलावा द्वितीय श्रेणी लिपिक प्रदीप कुमार सविता को सेवा से बर्खास्त किया गया हैए जबकि अमीन संतोष कुमार को पदावनत कर दिया गया है।

केडीए वीसी के पीए रह चुके हैं कश्यप कांत दुबे

केडीए के वरिष्ठ लिपिक कश्यप कांत दुबे पूर्व में उपाध्यक्ष के निजी सहायक पीए रह चुके हैं। उनके खिलाफ कार्रवाई स्वराज नगर की योजना.40 में एच.24ए ब्लॉक.सी के एक भूखंड के आवंटन से जुड़ी है। जांच में सामने आया कि भूखंड को रिक्त दर्शाते हुए उसका दोबारा आवंटन किए जाने के कारण विवाद की स्थिति पैदा हुई और इससे प्राधिकरण के हित प्रभावित होने की बात सामने आई। इस मामले की प्रारंभिक जांच में कश्यप कांत दुबे को दोषी पाया गया। इसके बाद उपाध्यक्ष अंकुर कौशिक के द्वारा 8 सितंबर 2026 के आदेश पर उन्हें निलंबित कर विभागीय कार्यवाही सस्थित किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। विभागीय जांच के लिए वित्त नियंत्रक, कानपुर विकास प्राधिकरण को जांच अधिकारी नामित किया गया है।

मुखर्जी विहार के भूखंडों में गड़बड़ी में लिपिक बर्खास्त

दूसरी बड़ी कार्रवाई द्वितीय श्रेणी लिपिक प्रदीप कुमार सविता के खिलाफ हुई है। मुखर्जी विहार में भूखंड संख्या 05ए 13ए 10 और 11 से जुड़े मामले में तथ्यों को छिपाने/ मिथ्या/त्रुटिपूर्ण प्रस्तुतीकरण और धोखाधड़ी के आधार पर कार्रवाई की गई। नामित जांच अधिकारियों की आख्या के आधार पर उपाध्यक्ष ने सविता को सेवाच्युत डिसमिसल करने का दंड दिया है।

12 लाख रुपये के लेनदेन के मामले में अमीन का डिमोशन

तीसरी कार्रवाई अमीन संतोष कुमार के खिलाफ हुई है। लैंड बैंक में तैनाती के दौरान ग्राम गंगपुर चकबंदाए बिठूर रोड से जुड़े मामले में शिकायतकर्ता को 1.38 करोड़ रुपये से अधिक के प्रतिकर भुगतान के बाद उससे ब्लैंक चेक लेकर पवन कुमार राय के खाते में 12 लाख रुपये का भुगतान कराने और टीडीएस प्रमाणपत्र जारी करने के लिए दोबारा 12 लाख रुपये की मांग किए जाने का आरोप था। इसी प्रकरण में संतोष कुमार को 7 मई 2025 को निलंबित किया गया था। बाद में उच्च न्यायालय के आदेश के क्रम में उन्हें बहाल किया गया। अब जांच आख्या के आधार पर अंकुर कौशिक ने 10 सितंबर 2026 को उन्हें अमीन पद के मूल वेतनमान पर स्थायी रूप से पदावनत कर दिया है।

स्टालिन का मीसा के तहत जेल जाने का कोई आधिकारिक आदेश नहीं: निर्मल कुमार

» तमिलनाडु सरकार के मंत्री ने डीएमके को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के मंत्री आर. निर्मल कुमार ने द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के प्रमुख एम. के. स्टालिन को उनकी हिरासत के आधिकारिक आदेश की प्रति दिखाने की शनिवार को चुनौती दी और इस दावे पर सवाल उठाया कि पूर्व मुख्यमंत्री को आपातकाल के दौरान आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था अधिनियम (मीसा) के तहत जेल में रखा गया था। राज्य के ऊर्जा संसाधन एवं विधि मंत्री निर्मल कुमार ने कहा कि आपातकाल के दौरान स्टालिन को प्रताड़ना झेलने वाले नेता के रूप में पेश करने के द्रमुक के पुराने दावे को सही साबित करने वाला कोई आधिकारिक रिकॉर्ड नहीं है।

उन्होंने इस दावे को खारिज किया कि द्रमुक अध्यक्ष को 1975-77 के आपातकाल के दौरान कड़े मीसा कानून के तहत गिरफ्तार किया गया था। निर्मल कुमार ने 17 सितंबर को होने वाले श्री मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तैयारियों का निरीक्षण करने के बाद यहां संवाददाताओं से कहा कि मीसा के तहत हिरासत में लिए जाने के स्टालिन के दावे की पुष्टि करने वाले आधिकारिक आदेश की कोई प्रति मौजूद नहीं है। उन्होंने कहा, हिरासत के आदेश की कोई प्रति नहीं है, मीसा के तहत कोई गिरफ्तारी नहीं हुई। उन्होंने विपक्षी द्रमुक पर स्टालिन को अपुष्ट ऐतिहासिक दावों के आधार पर राजनीतिक उत्पीड़न का शिकार हुए नेता के रूप में पेश करने की कोशिश करने का आरोप लगाया। कुमार ने कहा, मूल सवाल यही है कि उन्हें मीसा के तहत हिरासत में लिया गया था या नहीं। उन्होंने कहा, अगर किसी व्यक्ति को इस तरह के कानून के तहत गिरफ्तार किया जाता है तो उसकी हिरासत के औपचारिक आदेश की प्रति जरूर होती है। क्या स्टालिन या द्रमुक के पास ऐसे किसी आदेश की प्रति है? मंत्री ने द्रमुक के तर्कों को खारिज करते हुए कहा कि करीब 40 साल से जारी इस विवाद को पार्टी जितनी बार उठाती है, उसे उतना ही नुकसान होता है।

पंजाब में आप सरकार के स्कूलों की निष्पक्ष जांच करे सीजेपी : पायलट

» पंजाब प्रभारी कांग्रेस नेता ने दी चुनौती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब कांग्रेस के प्रभारी सचिन पायलट ने कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) को चुनौती दी कि वह आम आदमी पार्टी शासित राज्य के स्कूलों का ऑडिट भी उसी नज़रिए से करे, जैसा वह दूसरी जगहों पर करती है। पायलट राजस्थान के एक पत्रकार की बात का जवाब दे रहे थे। पत्रकार ने बताया था कि सीजेपी ने राज्य में ऑडिट के दौरान एक स्कूल को अस्तबल में चलते हुए पाया था, जबकि पंजाब में जिस स्कूल का दौरा प्रवक्ता सौरव दास के नेतृत्व वाले संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने किया था, वहां स्विमिंग पूल था। पायलट ने एक्स पर लिखा कि पंजाब या कहीं भी स्कूलों के ऑडिट का हर कोई स्वागत करेगा।

बस एक ही गुज़ारिश/सुझाव है पंजाब का ऑडिट भी उसी नज़रिए, उन्हीं सवालों और उसी हिम्मत के साथ करें, जिसके साथ आप दूसरी जगहों पर सरकारों का ऑडिट करते हैं। पंजाब को कोई खास छूट नहीं मिलनी चाहिए—और आप को भी कोई दोस्ताना रियायत नहीं मिलनी चाहिए। राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम को हाल ही में पंजाब कांग्रेस का प्रभारी नियुक्त किया गया है; उन्होंने छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल की जगह ली है। अगले साल की शुरुआत में पंजाब में विधानसभा चुनाव होने हैं और कांग्रेस 022 में सत्ता से बाहर होने के बाद क्क से सत्ता वापस पाने की कोशिश कर रही है। सीजेपी के सौरव दास ने प्रेशर ग्रुप के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ पंजाब का दौरा किया, जहां उन्होंने अपने स्कूल ठीक करो अभियान के तहत सरकारी स्कूलों की स्थिति का जायज़ा लिया। सीजेपी की टीम ने पंजाब के लुधियाना में स्कूलों का दौरा किया।

परिसीमन विधेयक पास करने के लिए शाह कर रहे साजिश : जयराम

» कांग्रेस का मानसून सत्र का सत्रावसान न करने में हुई देरी को लेकर मोदी सरकार पर निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस ने संसद के अनिश्चितकाल के लिए स्थगित होने के बाद भी सत्र का सत्रावसान न करने में हुई देरी को लेकर मोदी सरकार पर निशाना साधा और कहा कि उसने एक नया रिकॉर्ड बनाया है। पार्टी ने यह भी आरोप लगाया कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह लोकसभा में दो-तिहाई बहुमत हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि परिसीमन से जुड़ा संविधान संशोधन विधेयक पास कराया जा सके। कांग्रेस के संचार विभाग के प्रभारी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी सवाल उठाया कि सरकार परिसीमन प्रस्तावों पर व्यापक आम सहमति बनाने के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाने से क्यों इनकार कर रही है। उन्होंने पूछा कि भारतीय गणराज्य के मूल सिद्धांतों के लिए इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर

गोपनीयता और रहस्य क्यों बरता जा रहा है।

हालांकि, अनिश्चित काल के लिए स्थगन से सदन की बैठक तो खत्म हो जाती है और दोबारा मिलने की कोई तारीख तय नहीं होती, लेकिन सत्र कानूनी तौर पर खुला रहता है। जब तक राष्ट्रपति औपचारिक रूप से सत्र का सत्रावसान नहीं करते, तब तक तकनीकी रूप से सदन सत्र में ही माना जाता है। एक्स पर एक पोस्ट में रमेश ने कहा कि तो आज मोदी सरकार ने 2015 में बनाए अपने ही रिकॉर्ड को पीछे छोड़ते हुए एक नया रिकॉर्ड बनाया है। संसद के अनिश्चित काल के लिए स्थगन और उसके सत्रावसान के बीच का अंतर 29 दिन हो गया है। 2015 के मॉनसून सत्र के दौरान यह अंतर 28 दिन का था। उन्होंने कहा कि मॉनसून सत्र के लिए यह अंतर दिन-ब-दिन बढ़ रहा है और जल्द सत्रावसान की कोई साफ संभावना नहीं दिख रही है, साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि आम तौर पर यह अंतर सिर्फ तीन से चार दिन का होता है।

महिला एशिया कप : श्रीलंका ने पाकिस्तान को किया बाहर

» सेमीफाइनल में चार विकेट से हराया, भारत के साथ कल होगा खिताबी मुकाबला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। महिला एशिया कप टी20 के सेमीफाइनल में श्रीलंका की कप्तान चमारी अटापट्टू ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया था। पहले बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान ने श्रीलंका के सामने 131 रन का लक्ष्य रखा था। श्रीलंका ने 18.4 ओवर में लक्ष्य हासिल कर लिया और पाकिस्तान को टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। अब श्रीलंका का सामना 13 सितंबर को दुबई में होने वाले फाइनल में भारत से होगा।

फातिमा सना का ऑलराउंड प्रदर्शन बेकार गया। उन्होंने नाबाद 47 रन बनाने के अलावा चार विकेट भी लिए। एक वक्त श्रीलंका ने 33 रन पर चार विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद हर्षिता समरविक्रमा और कविशा दिलहरी ने पांचवें विकेट के लिए 67 रन की साझेदारी निभाई। इसके बाद पाकिस्तान के लिए मैच में वापसी करना मुश्किल हो गया। श्रीलंका को दूसरे ओवर में पांच के स्कोर पर पहला झटका लगा। और श्रीलंका को चौथा झटका 33 के स्कोर पर लगा। उसके बाद श्रीलंका को पांचवां झटका 100 के स्कोर पर लगा। इससे पहले पाकिस्तान शुरूआत अच्छी नहीं रही थी। पाकिस्तान ने 92 पर ही पांच विकेट गंवा दिए थे। इसके बाद फातिमा सना ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की। और 47 रन बनाए। वहीं, तुबा हसन 12 रन बनाकर नाबाद रहीं। दोनों के बीच छठे विकेट के लिए 24 गेंद में 38 रन की नाबाद साझेदारी हुई। जिसकी बदौलत पाकिस्तान का स्कोर 130 रन तक पहुंच सका।

अफगानिस्तान सीरीज से पहले अभिषेक ने जमकर किया अभ्यास

नई दिल्ली। अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज से पहले टीम इंडिया दिल्ली में तैयारियों में जुटी है। अरुण जेटली क्रिकेट स्टेडियम में खिलाड़ियों ने जमकर अभ्यास किया। इस दौरान अभिषेक शर्मा ने नेट्स में करीब आधे घंटे तक बल्लेबाजी की। शर्मा का पूरा ध्यान अपनी पावर-हिटिंग पर रहा। उन्होंने करीब 30 मिनट तक बल्लेबाजी की और स्पिन तथा तेज गेंदबाजों के खिलाफ अपने शॉट्स का अभ्यास किया। अभिषेक ने खास तौर पर रेंज हिटिंग पर जोर दिया। स्पिनरों के खिलाफ उन्होंने कई बड़े छक्के लगाए। वहीं, तेज गेंदबाजों के सामने भी उन्होंने आक्रामक शॉट खेलने की प्रैक्टिस की। प्रैक्टिस के बाद उनका एक अलग ही अंदाज देखने को मिला। वह मैदान पर तिरंगे वाली पतंग उड़ाते नजर आए। इस दौरान उनके साथ शिवम दुबे भी नजर आए। अभिषेक जिस पतंग को उड़ा रहे थे, वह तिरंगे के रंग में थी। उन्होंने करीब 10 से 15 मिनट तक पतंगबाजी का आनंद लिया। इस दौरान वह काफी सहज नजर आए।

बुढ़ाना में भाजपा के प्रति फूटा किसानों का गुस्सा

क्षितिजकांत

बेबाक बोल जनता खोल रही पोल

बुढ़ाना विस की ग्राउंड रिपोर्ट

» सरकार विज्ञापन में, किसान बर्बादी में, 4 किसानों ने एक सुर में कहा बीजेपी नहीं तो वोट नहीं,027 में जवाब देंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बुढ़ाना / मुजफ्फरनगर। बुढ़ाना विधानसभा में किसानों का गुस्सा अब सड़कों पर आ गया है। चार अलग-अलग किसानों, अनुज बालियान, विकास त्यागी, सुधीर और एक अन्य किसान ने भाजपा सरकार पर एक साथ हमला बोला। सबका एक ही नारा - चीनी महंगी, गन्ना सस्ता नहीं चलेगा, MSP दो या कुर्सी छोड़ो।

बुढ़ाना में एक ही गूंज -एमएसपी गारंटी कानून लाओ, नहीं तो जाओ। चारों किसानों की बातों से साफ है - बुढ़ाना का किसान अब विज्ञापन नहीं, दाम चाहता है। ट्रेड डील, आवारा पशु, नकली खाद, भ्रष्टाचार और बीजेपी को लेकर गांव-गांव में आक्रोश है।

अनुज बालियान

सम्मान निधि दान में दे देंगे, एमएसपी दे दो, नहीं तो यह आखिरी चुनाव होगा : अनुज बालियान

अनुज बालियान ने सबसे तीखा हमला किया। बोले, सरकार ने अखबारों में बड़े-बड़े विज्ञापन छपवा दिए, जमीन पर किसान को कुछ नहीं मिला। भाजपा का सारा मामला फर्जी है, श्रद्धूरूसे जीतते हैं। चीनी महंगी हो गई, गन्ना वहीं का वहीं। घर में चाय बनाकर पीते थे, वो भी छिन गई। इथेनॉल में हमारा गन्ना खपा दिया, मुनाफा कंपनी को। किसान सम्मान निधि, फसल बीमा, आय दोगुनी - तीनों जुमला है। हमें भीख नहीं चाहिए। हम सम्मान निधि दान में दे देंगे, अपनी जेब से भी दान दे देंगे, बस स्क्कदे दो। पेस्टिसाइड पहले नाममात्र लगता था, अब बिना जहर फसल नहीं होती, वो भी नकली, कोई जांच नहीं। नरज्ज से छोटा व्यापारी भी तबाह। ट्रेड डील तो किसानों को फांसी देने का ऑर्डर है, चैनलों से गायब करा दिया लेकिन गांव में हाहाकार है। एमएसपी गारंटी नहीं तो एक भी किसान वोट नहीं देगा। भाजपा फिर आई तो यह आखिरी चुनाव होगा।

बुढ़ाना विधानसभा एक नजर

बुधाना विधानसभा क्षेत्र भारत के उत्तर प्रदेश विधानसभा के 403 निर्वाचन क्षेत्रों में से एक है। यह मुजफ्फरनगर जिले का हिस्सा है और मुजफ्फरनगर लोकसभा क्षेत्र के छह विधानसभा क्षेत्रों में से एक है। इस विधानसभा क्षेत्र में पहला चुनाव 1957 में अंतिम आदेश डीसी (1953-1955) पारित होने के बाद हुआ था। 1967 में परिसीमन आदेश (1967 पारित होने के बाद यह निर्वाचन क्षेत्र अस्तित्व में नहीं रहा। 2008 में, संसदीय और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन आदेश, 2008 के दौरान इस विधानसभा क्षेत्र का पुनः सृजन किया गया। बुढ़ाना विधानसभा क्षेत्र का विस्तार बुढ़ाना तहसील (बुढ़ाना केसी के पीसी नाला, तालपुर भबीसा, कनियान, सल्फा और सुना को छोड़कर) है। इस निर्वाचन क्षेत्र में पहला चुनाव 1957 में हुआ था।

राजनीतिक इतिहास

परिसीमन के बाद इस सीट पर अलग-अलग दलों के विधायक चुने जाते रहे हैं। **22 विधानसभा चुनाव:** राष्ट्रीय लोक दल (रालोद) के राजपाल सिंह बलियान ने जीत दर्ज की। उन्होंने भाजपा के उमेश मलिक को हराया था। **17 विधानसभा चुनाव-** भारतीय जनता पार्टी के उमेश मलिक विधायक बने। **12 विधानसभा चुनाव-** समाजवादी पार्टी के नवाजिश आलम खान ने यह सीट जीती थी। प्रसिद्ध किसान नेता चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत का गांव सिसौली भी 11 के परिसीमन के बाद इसी बुढ़ाना विधानसभा क्षेत्र का हिस्सा बना।

यूरिया लेने जाओ तो लाठी भुगतान मांगो तो तारीख 2027 में हिसाब होगा : सुधीर

सुधीर जी बोले, किसान को भुगतान नहीं मिल रहा, धरना करो तो सुनवाई नहीं। यूरिया लेने जाओ तो लट्ठ बजाते हैं। इस सरकार ने किसान को हर जगह लाइन में खड़ा कर दिया है। चीनी महंगी, एथेनॉल में गन्ना, पर किसान को लाभ जीरो। किसान इस सरकार के साथ नहीं है। समय रहते काम नहीं किया तो 2027 विधानसभा में हम सब मिलकर जवाब देंगे।

'आधार-पैन मांगकर डरा रही सरकार, चीनी तीन गुना कर दो पर गन्ने का दाम दो'

तीसरे किसान ने कहा, सरकार दबाव बनाने के लिए किसान संगठनों से आय का ब्यौरा, आधार, पैन, रिश्तेदारों तक की डिटेल मांग रही है, यह शोषण है। भ्रष्टाचारी अपनी तनख्वाह बढ़ा लेते हैं, किसान की आय कोई नहीं देखता। हमें जो मिला संघर्ष से मिला। पहले पेस्टिसाइड अच्छा आता था, अब घटिया और महंगा, शिकायत पर जांच नहीं।चीनी महंगी है तो तीन गुना कर दो, पर गन्ने का दाम तो बढ़ा दो। चीनी के दाम बढ़े, सोने के दाम बढ़े, बाबू की तनख्वाह बढ़ी, तो किसान का अनाज क्यों सस्ता? हम भी इंसान हैं, अन्नदाता हैं। सही रेट दे दो, बात खत्म।

आय दोगुनी नहीं, आधी हो गई गांव में 30 आवारा पशु, नौजवानों की जान गई : विकास त्यागी

विकास त्यागी बोले, किसान बर्बादी की कगार पर है। आय दोगुनी का वादा था, आधी हो गई। खाद नहीं, यूरिया नहीं, एमएसपी नहीं। स्वामीनाथन रिपोर्ट ठंडे बस्ते में। यह सरकार किसान के हक में है ही नहीं।मेरे गांव में 25-30 आवारा पशु घूमते है, फसल तबाह, सड़क पर एक्सीडेंट, मेरे क्षेत्र के कई नौजवानों की जान चली गई। अधिकारी बेलगाम, भ्रष्टाचार चरम पर। बिना रिश्वत फाइल नहीं हिलती। हम सरकार के साथ हैं, अगर स्वामीनाथन लागू करे, MSP दे, भ्रष्टाचार खत्म करे, रोजगार दे, गन्ने का दाम दे। जो किसान के हक में रहेगा, हम उसी की सरकार बनाएंगे।

नवीन गौड़ की संपत्ति की जांच की मांग

» सीएम को 27 बिंदुओं का शिकायत पत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर निगम लखनऊ की म्युनिसिपल को-ऑपरेटिव सोसायटी के सचिव नवीन गौड़ के खिलाफ कर्मचारियों के साथ कथित धोखाधड़ी, ऋण वितरण में अनियमितता और आय से अधिक संपत्ति अर्जित किए जाने के आरोपों को लेकर शिकायत सामने आई है। शिकायतकर्ता राहुल कुमार वाल्मीकि ने मुख्यमंत्री को 27 बिंदुओं का मांग पत्र भेजकर पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच कराए जाने की मांग की है।

शिकायतकर्ता का आरोप है कि समिति में कार्यरत कर्मचारियों के नाम पर कथित रूप से बिना उनकी जानकारी के ऋण स्वीकृत किए गए तथा ऋण की रकम को अन्य खातों में स्थानांतरित किया गया। शिकायत में कर्मचारियों की शेयर मनी और ऋण संबंधी रिकॉर्ड में भी अनियमितताओं की जांच की मांग की गई है। हालांकि, इन संपत्तियों के स्वामित्व, उनकी वास्तविक कीमत और उनके स्रोत से जुड़े आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि अभी नहीं हुई है। इसलिए जांच के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि शिकायत में लगाए गए आरोप तथ्यात्मक रूप से सही हैं या नहीं। शिकायतकर्ता राहुल कुमार वाल्मीकि ने मुख्यमंत्री को भेजे गए 27 बिंदुओं के मांग पत्र में मामले की उच्चस्तरीय जांच कराने की मांग की है। शिकायत में नवीन गौड़ की नियुक्ति की योग्यता से लेकर समिति में उनके कार्यकाल के दौरान हुए कथित ऋण घोटाले, कर्मचारियों के खातों में लेनदेन और संपत्तियों की जांच तक कई बिंदु उठाए गए हैं।

शिकायतकर्ता ने मांग की है कि समिति के रिकॉर्ड का स्वतंत्र ऑडिट कराया जाए और वर्ष 2018 से अब तक के ऋण प्रकरणों की जांच की जाए। प्रत्येक ऋण आवेदन में कर्मचारी के हस्ताक्षर, सहमति, बैंक खाते में रकम पहुंचने और उसके बाद रकम के स्थानांतरण की जांच किए जाने की मांग की गई है।

करोड़ों की संपत्ति अर्जित करने का आरोप

राहुल कुमार वाल्मीकि की शिकायत में नवीन गौड़ पर कथित रूप से कर्मचारियों के साथ धोखाधड़ी कर करोड़ों रुपये की संपत्ति अर्जित करने का आरोप लगाया गया है। शिकायतकर्ता के मुताबिक नवीन गौड़ ने बंगला, फार्म हाउस और लग्जरी गाड़ियां खरीदी हैं। शिकायतकर्ता ने इन संपत्तियों की खरीद के स्रोत, आय के ज्ञात साधनों और संपत्ति अर्जित करने के समय का मिलान कराए जाने की मांग की है। साथ ही बैंक खातों, संपत्ति खरीद के दस्तावेज, वाहन खरीद, समिति के वित्तीय रिकॉर्ड और अन्य संबंधित लेनदेन की जांच कराने की मांग की गई है।

चीन से लद्दाख और गलवान की जमीन वापस लें मोदी : राउत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मांग की है कि वे चीन के नेताओं पर दबाव डालें कि वे लद्दाख और गलवान के उन इलाकों से पीछे हटें जहां भारत ने घुसपैठ का आरोप लगाया है, और भारत की ज़मीन वापस करें। राउत ने कहा कि पिछले दो सालों में भारत और चीन के बीच बातचीत के 25 दौर हो चुके हैं, लेकिन उन्होंने दोनों देशों के रिश्तों में हुई प्रगति पर सवाल उठाए।

उन्होंने कहा कि पीएम मोदी को भारत आ रहे चीन के राष्ट्रपति से साफ़ तौर पर कहना चाहिए कि वे सबसे पहले लद्दाख और गलवान के उन इलाकों से पीछे हटें जहां उन्होंने घुसपैठ की है, और हमारी ज़मीन हमें वापस करें। उन्होंने आगे कहा कि पिछले दो सालों में चीन के साथ बातचीत के 25 दौर हो चुके हैं - फिर भी रिश्तों में क्या सुधार हुआ है? दूसरी ओर, ईरान के राष्ट्रपति का दौरा बहुत अहम है। मैंने देखा कि ईरान के राष्ट्रपति शेर की तरह दिल्ली पहुंचे... ईरान ने इज़राइल और अमेरिका के सामने अपनी ताकत, जज़्बे और आत्म-सम्मान का प्रदर्शन किया है... बाकी सब तो बस व्यापारी हैं - चीन एक व्यापारी है, और अमेरिका भी एक व्यापारी है।

इंस्टाग्राम पर मेरी पोस्ट्स को लगातार ब्लॉक कर रही सरकार : गौरव दास

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के मुख्य प्रवक्ता सौरव दास ने कहा कि मेटा इंस्टाग्राम पर मेरी पोस्ट्स को लगातार ब्लॉक कर रहा है। इसे लेकर उन्होंने मोदी सरकार पर निशाना साधा है. सौरव दास ने शनिवार (12 सितंबर) को एक्स पर पोस्ट कर कहा कि मेरे सोशल मीडिया अकाउंट्स को लगातार टारगेट किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि किसी नय्यर गितेश ने अक्षत त्रिपाठी के साथ मेरे वीडियो की रिपोर्ट की.।

उन्होंने बताया कि अक्षत 20 साल का स्टूडेंट है, जिसके लिए ग्रेटर नोएडा अथॉरिटी ने 5 लाख रुपये का बेल बॉन्ड जारी किया था। इसके साथ ही उन्होंने सोशल मीडिया कंपनी मेटा पर कई सवाल उठाए हैं. उन्होंने सोशल मीडिया अकाउंट्स, अकाउंट्स की रीच और ब्लॉक करने को लेकर सोशल मीडिया कंपनियों को भी घेरा है. उन्होंने एक्स पर किए पोस्ट में कहा कि क्या मेटा में कोई जांच-पड़ताल नहीं होती? इसकी वजह से मेरे अकाउंट की रीच कम हो रही है। मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए सौरव दास ने कहा कि मैं सोशल मीडिया कंपनियों से फिर अपील करता हूं कि वे सरकार के दबाव में न आएं. सौरव दास ने अपनी पोस्ट के साथ ही अकाउंट का स्क्रीनशॉट भी शेयर किया है, जो कि कॉपीराइट वायलेशन को लेकर है।

भारत में ब्रिक्स सम्मेलन को लेकर गरमाई सियासत

कांग्रेस बोली ब्रिक्स के जरिए भारत का ऐतिहासिक कूटनीतिक दर्जा बहाल करे मोदी सरकार

» भाजपा के पलटवार के बाद कांग्रेस ने लेटर जारी कर किया समर्थन

» कांग्रेस में कई नेताओं में मदभेद, चिदंबरम व थरूर की अलग-अलग राय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में ब्रिक्स सम्मेलन हो रहा है। उस पर सियासत भी तेज हो गई है। विपक्ष ने भाजपा सरकार को घेरते हुए पूछा है कि इससे क्या लाभ होगा। इस पर भाजपा ने भी पलटवार किया है।

हालांकि कांग्रेस के कुछ लोग जहां सवाल उठा रहे हैं वहीं कुछ समर्थन भी कर रहे है। उधर इसको लेकर कांग्रेस ने सफाई भी दी है। इसबीच रूस, ईरान व चीन के राष्ट्रपति भारत पहुंच चुके हैं। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए आर्थिक नीतियों में तालमेल बिठाने और वैश्विक शासन पर एक साझा रुख रखने का मंच है। यह विकास, वित्त, तकनीक, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर ध्यान केंद्रित करते हुए, बहुपक्षीय संस्थाओं में ग्लोबल

अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दे सरकार : खुर्शीद

पार्टी के विदेश विभाग के प्रमुख सलमान खुर्शीद ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर एक बयान में कहा कि भू-राजनीतिक टकराव, आर्थिक दबाव, आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरियों, संघर्ष और जलवायु संकट के दौर में भारत को ब्रिक्स साझेदारों के साथ मिलकर एक न्यायसंगत और संतुलित विश्व व्यवस्था के निर्माण के लिए काम करना चाहिए, जो सभी लोगों के लिए सुरक्षा, समृद्धि और गरिमा सुनिश्चित कर सके। पूर्व विदेश मंत्री खुर्शीद ने कहा कि भारत को ब्रिक्स में नैतिक नेतृत्व और रणनीतिक स्पष्टता प्रदान करनी चाहिए तथा साथ ही अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

साउथ के हितों को आगे बढ़ाने का काम करता है। वहीं कांग्रेस ने ब्रिक्स को ग्लोबल साउथ की आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने और वैश्विक स्थिति को आकार देने वाला महत्वपूर्ण मंच बताते हुए शनिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तथा उनकी सरकार को भारत का ऐतिहासिक कूटनीतिक दर्जा बहाल करने का प्रयास करना चाहिए। 'ग्लोबल साउथ' से तात्पर्य उन देशों से है जिन्हें अक्सर विकासशील, कम विकसित अथवा अविकसित के रूप में जाना जाता है और ये मुख्य रूप से अफ्रीका, एशिया और लातिन अमेरिका में स्थित हैं।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा